वर्ष-25 दिसम्बर-2004 अंक-8

हिन्दी प्रचार वाणी

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह भग्न विजयमाला सी।
उसके फूल यहाँ संचित है, है यह स्मृतिशाला-सी।

सुभद्रा कुमारी चौहान

जन्म 1904

मृत्यु 1947

राजनैतिक क्षेत्र से प्रेरित आधुनिक काल की सर्व प्रथम सरल हृदय कवयित्री

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर-18.

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर-18 का आगामी 31 वाँ पदवीदान समारंभ दिनांक : 19-12-2004 को संपन्न होगा। पदवीदान समारंभ से सम्बन्धित प्रचारक बंधुओं को आवश्यक सूचनाएँ

-: सूचना :-

1. दिनांक : 19-12-2004 (इतवार) के दिन दीक्षांत समारोह मनाना निश्चित हुआ है। डॉ सरोजिनि महिषी-पूर्व संसद सदस्य (राज्यसभा) अध्यक्ष-संसदीय हिन्दी परिषद् दिल्ली, दीक्षांत भाषण देंगी।

2. सन् 2004 (फरवरी - सितंबर) में सम्पन्न समिति की "हिन्दी भाषा प्रवीण" परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को उक्त समारोह में उपाधि दी जाएगी।

3. उक्त पदवी प्रमाण पत्र के लिए विद्यार्थी से या प्रचारकों से आवेदन पत्र 20-11-2004 तक सशुल्क कार्यालय को प्राप्त हो जाना चाहिए।

4. प्रचारक या व्यक्तिगत रूप में छात्र अगर समिति द्वारा सूचित निर्धारित समय के अन्दर पदवीदान आवेदन पत्र भरकर सशुल्क नहीं भेजेंगे तो उनका प्रमाण पत्र तैयार नहीं किया जा सकेगा। जिन छात्रों का पदवीदान आवेदन पत्र सशुल्क समय के अन्दर प्राप्त हो जायेगा तो उनके प्रमाण पत्र तुरंत तैयार करने की व्यवस्था रहेगी। लेकिन जैसा प्रचारक या छात्र समारोह के पिछले दिन अर्थात् नाम रजिस्ट्रेशन के दिन आवेदन पत्र भरकर जमा करेंगे, उन्हें समारोह के लिए प्रमाण पत्र तैयार कर देने की व्यवस्था न की जा सकेगी। उन्हें बाद में जाँचकर पोस्ट द्वारा भेजने की व्यवस्था की जाएगी।

5. पदवीदान समारोह श्री श्री श्री चन्द्रशेखर भारती कल्याण मंटप, पंपमहाकवि रोड, शंकरपुरं, बेंगलोर में संपन्न होगा। प्रचारक बंधु दीक्षांत समारोह की सूचना अपने छात्रों को अवश्य दें। समिति द्वारा हर एक विद्यार्थी को सूचना नहीं दी जा सकेगी। यह समारोह पदवीधर विद्यार्थियों के लिए ही है अतः प्रचारक अधिक से अधिक विद्यार्थियों को पदवीदान समारोह में सम्मिलित करावें।

6. जो छात्र समारोह में सम्मिलित होकर उपाधि पत्र और शाल प्राप्त करना चाहते हैं वे 20-11-2004 तक फारम (एक फारम का दाम रु.5/-) भरकर नियत शुल्क रु.200/- एम.ओ. या डी.डी. के रूप में समिति को भेज दें। किसी भी हालत में चेक न स्वीकार किया जाएगा।

7. पदवीदान समारंभ में अनुपस्थित उपाधिधारियों को सिर्फ प्रमाण-पत्र नियमानुसार फारम भरकर समारोह के एक महीने के अन्दर रू.180/- भेजकर प्राप्त कर लेना आवश्यक है। एक महीने के बाद, एक साल तक अतिरिक्त रू.50/- भरकर सिर्फ प्रमाण पत्र ही प्राप्त कर सकेंगे। एक वर्ष के बाद हर वर्ष के हिसाब से अतिरिक्त दंडशुल्क रू.100/- भरकर सिर्फ प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकेंगे। किसी भी हालत में अनुपस्थित उपाधिधारी शाल प्राप्त नहीं कर सकते।

8. समारोह के दिन ही सिर्फ प्रचारकों एवं उपाधि प्राप्त करने वालों के लिए आवास एवं (सिर्फ बफे) अल्पाहार की व्यवस्था की जायेगी। हर प्रचारक या विद्यार्थी के लिए अलग अलग कमरा न दिया जा सकेगा। परिस्थिति के अनुसार सामूहिक रूप से व्यवस्था होगी। उस समय शायद बेंगलोर में ठंड ज्यादा हो सकती है अतः गरम कपड़े आदि की खुद व्यवस्था करके आना होगा। गरम पानी की व्यवस्था नहीं की जा सकेगी।

9. प्रचारकों को आने जाने का मार्गव्यय नहीं दिया जाएगा।

10. प्रचारकों को सूचना दी जाती है कि वे अपने उपाधिधारी छात्रों को समारोह के पिछले दिन 18-12-2004 शनिवार के दिन समिति में अपना नाम दर्ज कराने की सूचना दें। सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक नाम दर्जकर सकते हैं। किसी भी हालत में समारंभ के दिन नाम दर्ज नहीं किया जा सकेगा। समारोह के दिन छात्र तथा प्रचारक आकर परेशान करते हैं, जबरदस्ती से तंग करते हैं, इससे काम में रुकावट आती है। कृपया ऐसा अवकाश न दें।

अतः प्रचारकों से विनती है कि पदवीदान आवेदन पत्र सूचित समय के अन्दर भरकर शुल्क के साथ शीघ्र भेजने की व्यवस्था करें।

प्रधान सचिव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

हिन्दी प्रचार वाणी

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की मासिक मुख-पत्रिका

साहित्य वाचस्पति
स्व. डॉ0 पी.आर. श्रीनिवास शास्त्री
पत्रिका के संस्थापक

साहित्य वाचस्पति
सुश्री वी.एस.शांताबाई
प्रधान–संपादिका

साहित्य वाचस्पति
डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति
गौरव–संपादिका

प्रकाशक
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति
178, 4था मैन रोड, चामराजपेट
बेंगलोर–560 018
फोन : 26617777

गृह मंत्रालय (भारत सरकार) के राजभाषा विभाग के
पत्रांक 11014/8/96 रा.भा.प. दिनांक 28-10-96 के अनुसार
सभी सरकारी मंत्रालयों, विभागों और प्रतिष्ठानों में खरीदे जाने के लिए अनुमोदित

अन्य ग्राहकों के लिए वार्षिक चंदा	प्रमाणित प्रचारक वार्षिक चंदा	(प्रमाणित प्रचारकों को मुफ्त में हर माह पत्रिका भेजी जाती है)
रू. 60/-	रू. 30/-	

✡✡✡✡✡ विषयानुक्रमणिका ✡✡✡✡✡

संपादकीय ....

सुभद्राकुमारी - हमारी प्रिय कवयित्री

नारी कभी भी अबला नहीं हो सकती। वह अपने आत्मबल से सब प्रकार की विपात्तियों को हर कठिन परिस्थिति में भी सामना कर सकती है। यह अमूल्य आशावादी संदेश भारत की स्त्री-जाति के सम्मुख अपनी कविता द्वारा प्रस्तुत किया है हिन्दी जगत् की लोकप्रिय कवयित्री स्व. सुभद्रा कुमारी चौहान ने—

"खूब लडी मरदानी यह तो झांसीवाली रानी थी।
बुन्देलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।"

इन अविस्मरणीय पंक्तियों द्वारा महिलाओं में जोश पैदा करनेवाली कवयित्री आज से सौ साल पहले सन् 1904 में भारतमाता की गोद पर अवतरित हुई। उस समय विशाल भारत विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ था, भारतमाता विदेशी शासन की श्रृंखलाओं से बद्ध होकर आजादी के लिये तरस रही थी। सन् 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध जो प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध हुआ उसमें झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने जो वीरता दिखायी, देश की रक्षा में जो बलिदान दिया, ये सब भारतीय इतिहास में अमिट अक्षरों में अंकित हो गये हैं। झांसी लक्ष्मी बाई के गुणगान को लोकगीतों में सुनकर भारत माता की दुलारी दुहिता सुभद्राकुमारी चौहान का हृदय भी देशानुराग से छलकने लगा। प्रतिभा संपन्न इस कवयित्री ने बुन्देलखंड के लोकगीतों के आधार पर रानी लक्ष्मीबाई की वीरगाथा को कविता का रूप दे दिया और आज भी इस अमर कविता को सुननेवालों के भुजदंड फड़कने लगते हैं।

राष्ट्रीय धारा की प्रमुख कवयित्री मानी जानेवाली सुभद्राकुमारी चौहान भारत की दुर्दशा को दूर करने के इरादे से राजनैतिक आन्दोलनों में भी भाग लेती रही और अपनी कृतियों द्वारा जनमानस को भी प्रभावित करने लगी। तलवार से अधिक शक्ति लेखनी की ही होती है। 'मुकुल' नामक पुस्तक में कवयित्री की ओजपूर्ण कविताओं के साथ अत्यंत कोमल और मधुर भावनाओं से युक्त पद्य भी प्रकाशित हुए हैं। कहानी के क्षेत्र में भी अपने अमूल्य योगदान से सुभद्राकुमारी विख्यात हुई। सन् 1948 ई. में दुर्भाग्यवश एक मोटर दुर्घटना में उसके प्राण प्रखेरू उड़ गये—अगर वे जिन्दा रहती तो न जाने कितने कविता-रत्नों से हिन्दी भारती को सजाती होती।

भारत की वीर वनिता झांसी लक्ष्मीबाई की त्याग-कथा सुनकर उससे स्वयं प्रेरित होकर अपनी ओजपूर्ण कविता द्वारा देश की जनता को भी, विशेषकर महिलाओं को भी देश सेवा की ओर जिसने प्रवृत्त किया उस महान कवयित्री सुभद्राकुमारी का श्रद्धापूर्वक वन्दन करना और उसके अमर संदेश का पालन करना हम सबका कर्तव्य होगा। कवयित्री अब जीवित नहीं है, परन्तु उसकी वाणी सर्वत्र गूँज रही है। स्नेह व श्रद्धा से उसे सुनकर उसके संदेश को अपना कर उन्नति की राह पर हम आगे बढ़ें तो भारत जननी सदा संतुष्ट रहेगी।

कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान को उनके जन्म शताब्दी के अवसर पर समिति का परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

—डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति

हिन्दी प्रचारक की डायरी–30

–प्रो. एस. श्रीकण्ठमूर्ति

30-3-2003 कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति में परीक्षा समिति की बैठक – सम्मिलित।

25-4-2003 दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के प्रधान सचिव श्री शंकर शास्त्रीजी को ट्रंक काल करके बताया कि अगले सप्ताह मद्रास आनेवाले मेरें पुत्र के परिवार को सभा के अतिथि गृह में ठहरने की सुविधा दी जाय। उन्होंने स्वीकार किया।

7-5-2004 कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति में शिक्षक छात्रों की अन्तर परीक्षा – मूल्यांकन।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी एम.ए. उत्तीर्ण होनेवाले सर्व प्रथम कर्नाटक के छात्र, मैसूर विश्वविद्यालय में हिन्दी को प्रवेश करनेवाले कर्नाटक के गण्यमान्य ज्ञानवृद्ध-वयोवृद्ध श्री ना.नागप्पाजी अपने जीवन के नब्बे वर्षों को 26-5-2002 के दिन पूरा किया तो उनके शिष्य वृन्द, मित्र एवं बन्धु बांधओं ने उनके उस जन्म दिवसोत्सव को धूम-धाम से मनाया। उसी के सिलसिले उनके अभिनंदन ग्रंथ "पूर्ण कुंभ" को समर्पित करने का निर्णय लिया गया और उस ग्रंथ के लिए मैंने "बहुमुखी प्रतिभा वाले श्री नागप्पाजी" नामक लेख लिख भेजा।

26-9-2004 बेंगलूर आकाशवाणी से पत्र आया था कि गान्धी जयन्ती के अवसर पर गान्धीजी पर 15 मिनट के बातचीत का कार्यक्रम दिया जाय। तदनुसार आज आकाशवाणी गया और श्रीमती सरिता शर्माजी से 15 मिनट का गान्धीजी संबंधी वार्तालाप रिकार्ड किया गया।

2-11-2002 कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की परीक्षा बोर्ड की मीटिंग – सम्मिलित हुआ।

2003 – दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (तमिलनाडु) ने अपनी मुखपत्रिका "हिन्दी पत्रिका" का स्वर्ण जयंती समारोह को (1952-2002) जनवरी 2003 में मनाने का निश्चय किया और तत्संबंधी 'स्मारिका-ग्रंथ' के लिए मुझसे लेख माँगा। उनके सूचनानुसार मैंने "मद्रास नगर में मेरा हिन्दी प्रचार कार्य" नामक लेख भेज दिया हिन्दी पत्रिका स्वर्ण जयंती समारोह 19-1-2003 को तिरुचिरपल्ली में संपन्न हुआ।

18-1-2003 कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा श्री निजगुण क्षेत्र सभा भवन में हिन्दी प्रचारक सम्मेलन संपन्न हुआ। प्रो.ना.नागप्पाजी की अध्यक्षता में बेंगलूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की रीडर् डॉ0 मिताली भट्टाचार्यजी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

उसी दिन मध्याह्न समिति की अध्यक्षा डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्तिजी की अध्यक्षता में विश्वविद्यासदन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री कटील गणपति शर्माजी ने समापन भाषण प्रदान किया।

19-1-2003 कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की परीक्षा समिति की बैठक में सम्मिलित हुआ।

उसी दिन श्री निजगुणक्षेत्र सभांगण में समिति का उनतीसवाँ पदवीदान समारंभ संपन्न हुआ। कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदीजी ने अभिभाषण दिया।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, आगरा तथा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के संयुक्त तत्वावधान में पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जन्मशती समारोह मनाने का निश्चय किया गया तथा तत्संबंधी "स्मारिका" ग्रंथ के लिए मुझसे लेख माँगा गया। मैंने "श्री मोटूरी सत्यनारायणजी संस्मरण और योगदान" नामक लेख लिख भेजा। पद्मभूषण मोटूरी सत्यनारायण-जन्मशती समारोह मद्रास में 22 तथा 23 मार्च 2003 को संपन्न हुआ।

23-3-2003 के दिन निम्नलिखित हिन्दी सेवियों को सम्मानित नामपत्र देकर किया गया।

1. श्री वेमूरी आंजनेय शर्मा (आन्ध्र)
2. श्री पी. नारायण (केरल)
3. श्री टी.एस. राजुशर्मा (तमिलनाडु)
4. श्री एस. श्रीकण्ठमूर्ति (कर्नाटक)
5. श्री एम. सुब्रह्मण्यम् (चेन्नै)

अपनी अस्वस्थता के कारण उपर्युक्त समारोह में मैं उपस्थित न हो सका।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आन्ध्र) हैदराबाद के अधिकारियों की तरफ़ से पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जन्मशती समारोह मनाने का निश्चय किया गया और तत्संबंधी मुख पत्रिका "सुवन्ती" के जन्मशती विशेषांक

के लिए उनके अनुरोध पर मैंने "श्री सत्यनारायणजी जैसे मैंने जाना" नाम था लेख लिख भेजा।

9-2-2003 समिति द्वारा बेंगलूर स्वैच्छिक संस्थाओं के हिन्दी विद्यालयों के छात्रों की स्पर्धा विजेताओं को पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ। डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्तिजी की अध्यक्षता में पूर्व उप-प्रांशुपाल श्री पी. जी. वेंकटगिरि द्वारा समारोह का उद्घाटन हुआ। और मध्याह्न बेंगलूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व-अध्यक्ष डॉ0 सरगु कृष्णमूर्तिजी की अध्यक्षता में मेरे द्वारा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

6-6-2003 समिति की स्वर्ण जयंती मनाने के सिलसिले में नगर के प्रमुख हिन्दी सेवियों की एक बैठक समिति में बुलायी गयी थी। मैं भी उपस्थित रहा।

19-7-2003 समिति की स्वर्ण जयंती समारंभ के सिलसिले कार्यक्रमों पर विचार विनिमय करने हेतु स्थानीय हिन्दी सेवियों की एक बैठक समिति भवन में बुलायी गयी। मैं भी उपस्थित रहा।

20-8-2003 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली एवं कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में "हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक शिबिर" का आयोजन समिति के कालेज के सभा भवन में 20-8-2003 से 27-08-2003 तक संपन्न हुआ।

20-08-2003 को मैसूर विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त आचार्य प्रोफ़ेसर डॉ0 कुसुमगीता द्वारा शिबिर का उद्घाटन हुआ और 27-8-2003 को पूर्व सचिव, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास एवं पूर्व उप-प्रांशुपाल हिन्दी प्रशिक्षण विद्यालय, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के श्री एस.श्रीकण्ठमूर्ति की अध्यक्षता में शिबिर का समापन कार्य संपन्न हुआ।

4-9-2003 से 9-9-2003 तक समिति द्वारा संचालित हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण कालेजों के प्रवक्ताओं के लिए संदर्शन का कार्यक्रम चला।

4-9-2003 को हासन, 5-9-2003 को बेंगलूर 6-9-2003 को शिमोगा तथा रायचूर, 8-9-2003 को बल्लारी, 9-9-2003 को बेलगाम तथा 10-9-2003 को हुबली कालेजों के लिए प्रवक्ताओं का सर्वश्री डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्तिजी, वेंकटगिरीजी, श्रीकण्ठमूर्तिजी तथा बी.एस.शांताबाईजी द्वारा संदर्शन करके प्रवक्ताओं को चुना गया।

20-9-2003 को भारतीय भाषा संगम (कर्नाटक) की व्यवस्थापिका समिति की बैठक कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति के सभा भवन में संपन्न हुई। और अगले वर्ष के लिए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया। मैं कोशाध्यक्ष चुना गया।

18-10-2003 को समिति की परीक्षा बोर्ड की समिति की बैठक हुई। मैं भी सम्मिलित हुआ।

26-11-2003 को भारतीय भाषा संगम (कर्नाटक) की तरफ़ से शतायुषी श्री निट्टूर श्रीनिवासरावजी का अभिनंदन, भारतीय संस्कृति विद्यापीठ के स्कूल भवन में प्रो. ना.नागप्पाजी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। भारतीय संस्कृति विद्यापीठ के संस्थापक डॉ0 नागेश हत्वारजी ने श्री श्रीनिवासराव को मालार्पण किया, हिन्दी प्रचार परिषद् के सचिव डॉ0 रामसंजीवय्या ने स्मृति चिह्न प्रदान किया। श्री कटील गणपतिशर्माजी ने शाल ओढ़ाया और कन्नड़ अभिनंदन पत्र पढ़ सुनाया। श्री श्रीकण्ठमूर्तिजी ने हिन्दी अभिनंदन पत्र पढ़ सुनाया। श्री रामचन्द्र भट्टजी ने संस्कृत-अभिनंदन पत्र पढ़ सुनाया। समिति की अध्यक्षा डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्तिजी ने निट्टूरजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

श्री श्रीनिवासरावजी बेंगलूर में हिन्दी प्रचार के प्रारंभिक दिनों में उनकी अपनी सेवाओं का विवरण दिया। अध्यक्ष भाषण के बाद संगम के सचिव श्री नरहरिरावजी ने धन्यवाद समर्पित किया।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के अधिकारियों ने समिति की स्वर्ण जयंती दिसंबर के अंतिम सप्ताह में मनाने का तथा उस अवसर पर अपनी मुखपत्रिका "हिन्दी प्रचार वाणी" का "स्वर्ण जयंती विशेषांक" निकालने का निर्णय लिया। उसके लिए संपादिका के सूचनानुसार मैंने "कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्थापना एवं संवर्द्धन" नामक लेख लिख भेजा। (क्रमशः)

मेरा साहित्यिक सफरः तब और अब

—राजेश कुमार सिंह,इलाहाबाद

तीर्थराज प्रयाग के कोरांव तहसील स्थित कैथवल गांव में मेरा जन्म पहली जुलाई सन् 1964 को हुआ है। छः माह की अवस्था होते-होते मेरे माता-पिता वहाँ से हटकर इलाहाबाद शहर के साउथ मलाका तदनंतर बैरहना के तालाब नवलराय मुहल्ले में कुछ दिनों तक रहे हैं। इस समय तक हमें कोई ज्ञान नहीं था। वर्ष 1971 से जब मेरे माता-पिता अल्लापुर के लेबर चौराहे से उत्तर मकान नं. 235 डी. में रहने लगे, तब मैंने अपनी प्रारम्भिक पढ़ाई कक्षा आठ तक सरदार पटेल जूनियर हाई स्कूल से पूर्ण किया। इन्टर की परीक्षा कर्नलगंज इन्टर कालेज से तथा बी.ए. की परीक्षा सी.एम.पी. डिग्री कालेज से उत्तीर्ण किया। एम.ए. की उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा प्राप्त हुआ है।

मूल रूप से मेरे आदरणीय पिता श्री पंचम सिंह का पैतृक स्थान वाराणसी जनपद के सत्तनपुर गांव में है। मेरी स्वर्गीय पूज्य माता भी इसी जनपद की रही हैं। पिता जी बी.काम. तक की शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1958 से ही इलाहाबाद में रहने लगे। 72 वर्ष से ज्यादा की अवस्था पार कर चुकने के बाद भी वे अपने पैतृक परिवार में समय-समय पर जाते रहते हैं। पिताजी के बाबा महेश और पिता वंशराज की गणंना उस इलाके के सम्मानित व्यक्तियों में की जाती रही है। हमें अपने इस महत्वपूर्ण गाँव में जाने का बहुत कम अवसर मिला है। दो चार बार पारिवारिक कार्यक्रमों में जरूर शामिल हुआ हूँ। इस समय मैं अपने पिताजी पत्नी इन्दू देवी और दो वर्ष की अनुसिका सिंह नामक पुत्री के साथ अल्लापुर वाले मकान में रह रहा हूँ।

जब मैं बी.ए. प्रथम वर्ष का विद्यार्थी रहा उसी समय 1985 में मेरी माता रानी देवी का आकस्मिक निधन हो गया। माँ के जीवन काल में मैं जो अपनी साहित्यिक अभिरुचियों को आयाम दे रहा था, वह सब माँ के निधन से अवरुद्ध हो गया। लेकिन एम.ए. की पढ़ाई और साहित्यिक लेखन की भी मीमांसा ने हमें अपने महान कष्टों पर विजय पाने की प्रेरणा सदैव देते रहे हैं।

इलाहाबाद में मेरे पिताजी का सम्पर्क कैंट रेलवे स्टेशन के पास निवास करने वाले स्वर्गीय बाबू दीनानाथ सिन्हा यादव और अलोपीबाग स्थित उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता माननीय नरेन्द्र नाथ सिन्हा साहब से हुआ। जहाँ से उन्हें बहुतेरे महान व्यक्तियों से बहुत कुछ सीखने को मिला। जिसका प्रभाव मेरे ऊपर पड़े बिना नहीं रह सका। मेरी माँ मेरे लिए अपने विलक्षण ज्ञान का अपार भंडार छोड़ गयी हैं। पिताजी आज भी सिन्हा साहब के सम्पर्क में बने हुए हैं। अपने अनिश्चित आय के बीच रहकर पिताजी जिस प्रगाढ़ महत्वाकांक्षा से अपने एकलौते बेटे को पढ़ाने और उसके साहित्यिक जीवन में जो सहयोग प्रदान किया है, वैसा विरले लोगों में ही देखने को मिलता है।

आई.ए.एस.पी.सी.एस. एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं में मुझे तैयारी करने और उसमें भाग लेने का जो अवसर मिला वह सब लाभदायक प्रमाणित नहीं हो सका किन्तु उससे अर्जित ज्ञान का लाभ मैंने अपने विद्यार्थी जीवन के साहित्य में अवश्य उठाया। बीच में कुछ व्यवधान पड़ने के पश्चात् वर्ष 2001 से मुझमें अपने साहित्यिक जीवन के प्रति जो पुनः अनुराग पैदा हुआ वह निरन्तर चल रहा है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत मैंने प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी निबंध प्रश्नपत्र के विशिष्ट महत्व को देखते हुए अधिकांश परीक्षार्थियों द्वारा इसमें बहुत कम अंक अर्जित कर पाने की समस्या से यथा शीघ्र ही सारगर्भित सुव्यवस्थित सुभाषित सरल शब्दों के साथ सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को समेटते हुए ओजस्वी एवं आकर्षक ढंग से निबंध की जिन तीन पुस्तकों को लिखा और सरस्वती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित होने के बाद पी.सी.एस. के परीक्षार्थियों ने इसे सर्वाधिक रूप से अपनाया। अतः हमें प्रकाशक के विशेष आग्रह पर "राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा" विषय पर जो पुस्तक लिखी उसे प्रकाशक ने यथाशीघ्र ही प्रकाशित कर हमारे हौसले को काफी बढ़ाया।

हमारे निबंध की तीनों पुस्तकों में चिंतन विचार एवं गंभीरता के पुट के समावेश कल्पना बुद्धि एवं शैली की प्रचुरता और ज्वलंत अंतर्राष्ट्रीय विषयों के सम-सामयिक मिश्रण के चलते इसे विद्यार्थियों के साथ मेधावी छात्र-छात्राओं एवं सामान्य अध्येताओं ने सबसे अधिक अपनाया। विशेषकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों ने इन पुस्तकों की व्यापक सराहना करते हुए हमें शहर-का एक प्रतिभावान लेखक बताया।

दैनिक और मासिक पत्र पत्रिकाओं के साहित्यिक पन्नों को पढ़ने में अपनी विशेष दिलचस्पी के चलते प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे विषयों से संदर्भित सामग्रियों का अत्यधिक अध्ययन मनन के साथ ही साथ विज्ञान की पुस्तकों व पत्रिकाओं को भी अपने अध्ययन का अनिवार्य हिस्सा बनाकर कुछ उपयोगी लेख लिखा जो कि कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुआ।

प्रारम्भ से ही हमारी अन्य विद्यार्थियों की भाँति चाय की दुकानों, जलपान गृहों, दशहरे के मेलों, खेलकूद और सामान्य मनोरंजन में भी कोई रुचि नहीं रही। प्रयाग संगीत समिति, हिन्दुस्तानी एकेडमी, विज्ञान परिषद् और हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसे भव्य सभागार में आयोजित होने वाले विविध संगोष्ठियों में सम्मिलित होकर देश के श्रेष्ठ विद्वानों, बुद्धिजीवियों व कवियों के श्रेष्ठतम विचारों और काव्य पाठों का जो अनुश्रवण किया, उसका हमारे दिलो दिमाग पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा और मैंने कुछ पत्र-पत्रिकाओं में अपना जो निबंध भेजा उसमें उसका छायाचित्र के साथ प्रकाशन व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित होने का सुयोग्य मिला। देश की अनेक साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं के साथ प्रतियोगितात्मक पत्रिकाओं ने भी हमारे निबंध को प्रमुखता के साथ प्रकाशित करते हुए शील्ड और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

किसी ो भी अपने सम्मुख देखकर उसका वास्तविक चित्र बना सकने की हमारी विशेष निपुणता से आकर्षित होकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष व सुप्रसिद्ध चित्रकार डॉ0 जगदीश गुप्त ने ऐसी निपुणता की व्यापक सराहना की। प्रयाग की महीयसी कवियित्री महादेवी वर्मा और सुप्रसिद्ध एकांकीकार डॉ0 राम कुमार वर्मा ने भी हमारे चित्र कौशल पर अपनी प्रसन्नता जतायी।

लेकिन हमारे जीवन का सबसे निर्णायक समय हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी के साथ स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान बिताया गया चार-पाँच वर्ष की अवधि रहा। किसी भी प्रकार के अभिमान से दूर प्रकृति और लोकतांत्रिक सदृश मूल्य पर चलने वाले अत्यंत ही व्यवहार कुशल व सहज विनोद प्रकृति तथा अपने विद्यार्थियों के प्रति सदा नम्र व आदर भाव रखने वाले डॉ0 राम स्वरूप चतुर्वेदी से विशेष रूप से प्रभावित होकर हम उनके ही श्री चरणों में समर्पित होकर कुछ नया गुर सिखाने का जो आग्रह किया उसे उन्होंने सहजता के साथ स्वीकार करते हुए डॉ0 जगदीश गुप्त, महादेवी वर्मा व डॉ0 राम कुमार वर्मा जैसे लोगों से हमारा परिचय करवा दिया। कुछ एक महिनों के बाद इन शीर्ष स्तर के साहित्यकारों ने देश के सभी विश्वविद्यालयों में शिक्षित युवाओं में बढ़ती ही जा रही नशाखोरी की प्रवृत्ति से उन्हें दूर हटाकर देश की मुख्य राष्ट्रीय धारा से जोड़ सकने के अभिप्राय से कुछ मार्मिक गीत लिखने का जो आग्रह किया उसे हमने अपना सौभाग्य समझकर देश भक्ति से युक्त जिन गीतों को लिखा उसे उन्होंने काफी पसंद किया। ऐसे कुछ गीत, कविताएँ व गज़लें जिन कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई उसे पाठकों ने काफी पसंद करते हुए जो प्रशंसा पत्र हमारे पास भेजा उससे हमें कुछ बेहतर रचनायें लिखने की व्यापक स्फूर्ति मिली।

हमारे मुहल्ले के रामलीला मैदान में प्रतिवर्ष ही आयोजित होने वाले विराट कवि सम्मेलन में उपस्थित राष्ट्रीय स्तर के कवियों ने अपने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत कविताओं का पाठ करके हमें देश में व्याप्त सांस्कृतिक प्रदूषण को दूर भगा सकने वाली रचनाओं को लिखने का जो जज्बात पैदा किया और हमने अपने अथक परिश्रम से "स्वतंत्रभारत" और लगभग सवा दो सौ पद्यों का "मधुशाला की मधुबाला" नामक जो लघु खण्ड काव्य लिखा उसे हमारे मुहल्ले के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रभात शास्त्री और नाटककार विनोद रस्तोगी सहित इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अनेक विभागाध्यक्षों ने भी व्यापक रूप से प्रशंसा करते हुए अपनी शुभ कामना के द्वारा हमारे उत्साह में अतिशय वृद्धि की।

इससे उत्साहित होकर हमने रवीन्द्र नज़रुल, जय शंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नागार्जुन, केदार नाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह खरे, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्याम नारायन पाण्डेय और महादेवी वर्मा के लिखे हुये कविताओं का गहन रूप से अध्ययन मनन किया। बाद में उन सभी की ऐसी कविताओं में निहित विरह, वैराग्य, वेदना, प्रीति, पुकार, पीड़ा, उपालम्भ, देशभक्ति, करुणा, वीर रस तथा प्रकृति की सुरम्यता से सीख लेकर कुछ नये गीत और कवितायें लिखने का निश्चय किया। ऐसे गीत और कविताओं में भाव छंद लय व ताल के साथ वस्तु

भाषा शिल्प प्रकृति व रंग का सुंदर समावेश करके अपने कविता प्रेमी आम पाठकों को हमने निराश नहीं होने दिया। गीत और कविताओं में चमत्कार पूर्ण उक्तियों और शब्दों की दुरुहता से बचते हुये विविधता रूपी जो इंद्र धनुषी छटा बिखेरी उससे आम पाठकों में एक नया जोश और स्फूर्ति का संचार उत्पन्न हुआ।

बिहारी, कबीर, तुलसी और रहीम के पद चिन्हों पर चलते हुए हमने दोहों के माध्यम से दो पंक्तियों में गागर में सागर भर सकने के अभिप्राय से अभी तक जिन दोहों को लिख पाने में कामयाब हो पाया उसे जनमानस ने काफी पसंद किया। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने भी इसे आसानी के साथ समझकर अधिकाधिक ग्रहण किया। हमारी दोहों की भाषा के सरल तथा गंभीर अर्थ लिये होने से इनमें जीवन दर्शन की उपस्थित का व्यापक आयाम व हमारे समाज के लोक व्यवहार का दर्शन चित्रांकित हुआ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने व विश्वविद्यालय को छोड़ते ही मुसीबतों ने हमें पुनः आगोश में घेर लिया। सबसे पहले विवाह व इससे उत्पन्न आर्थिक चिंता व तत्पश्चात् एक वर्षीय पुत्र के निधन के कारण अपने मुख्य सपने पी.सी.एस. की तैयारी का इरादा बदलना पड़ा। कुछ श्रम से थोड़ा बहुत रुपया कमाकर परिवार के खर्च को चला सकने की मुख्य आवश्यकता के चलते साहित्य लेखन के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ स्वर्णिम अनुराग शिथिल हो गया। कुछ एक वर्षों के बाद पिताजी के मनोभावना से हम बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र से जुड़कर इसके निदेशक एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति लब्धि कृषि वैज्ञानिक डॉ0 बृजेश कान्त द्विवेदी के दिशा निर्देशन में बायोवेद शोध फार्म प्रभारी के पद पर कार्य करते हुए उनकी गद्य में लिखी गयी अनेक किसानोपयोगी पुस्तकों को पद्य में लिखकर अपने साहित्य प्रेम को दर्शाया। बायोवेद रिसर्च सोसायटी द्वारा प्रकाशित ये लघु खण्ड काव्य कृषक खजाना बायोनीमा, आधुनिक जलकृषि, सब्जियों की आधुनिक खेती (2002) लाख की आधुनिक खेती, बायोवेद एक अध्ययन (दो भाग-2004) को कम पढ़े लिखे किसान भाइयों ने भी काफी पसंद किया। इलाहाबाद जनपद के मेजा एवं कोरांव तहसील के दर्जनों से भी अधिक गाँवों के अत्यंत ही कम पढ़े लिखे लोगों ने बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र द्वारा यहाँ पर लाख की खेती का शुभारम्भ किये जाने के अवसर पर हमारे लघु खण्ड काव्य लाख की आधुनिक खेती को काफी पसंद करते हुए हमारी मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मेरठ में वर्ष 2002 में सम्पन्न चतुर्थ अखिल भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं कृषक कांग्रेस महाधिवेशन के अवसर पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 रमेश चन्द्रा ने बायोवेद रिसर्च सोसाइटी द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों का अपने कर कमलों से लोकार्पण और तत्पश्चात् उपस्थित किसान भाइयों में इसकी अपार लोकप्रियता के परिप्रेक्ष्य में हमारे अत्यंत ही सहजता सरलता और नम्रता की प्रशंसा करते हुए हिन्दी साहित्य को इसी तरह से समृद्ध करते रहने पर बल दिया।

महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और अंतरिक्ष यात्री स्व. कल्पना चावला के व्यक्तित्व पर आधारित जिन दो काव्य पुस्तकों राई से पर्वत की बात और कल्पना चावला का स्वर्णिम इतिहास को और उन्हें राष्ट्रपति भवन भेजा उनमें से कल्पना चावला पुस्तक पर उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने हमें अपने शुभ कामना पत्र से गौरवान्वित किया।

बायोवेद रिसर्च सोसाइटी द्वारा हमारे जैव प्रौद्योगिकी मशरुम की खेती, सूत्र कृमियों का महाप्रकोप कहाँ और कैसे, मृदा परीक्षण की अवधारण जैसे लघु खण्ड काव्यों के प्रकाशन की सहमति से उत्साहित होकर इधर हम महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति लब्धि कृषि वैज्ञानिक डॉ0 बृजेश कांत द्विवेदी के लगभग मिलते हुए वैज्ञानिक दृष्टि को 'कलाम दृष्टि और बायोवेद' नामक खण्ड काव्य एवं 'सुगंधित फूल और औषधीय पौधों की खेती' को लिखने की जो उत्सुकता दिखलायी तथा किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह व 'विविध रूपों में रज्जू भैया' जैसे लोगों पर जो खण्ड काव्य लिख डाला उसके प्रति हमारे इस तरह के जुनून घोर प्रतिबद्धता आत्मविश्वास व कठोर संकल्प से अत्यंत ही खुश होकर के डॉ0 बृजेश कांत द्विवेदी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विज्ञान परिषद् हाल में 21 फरवरी 2004 को छठें अखिल भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं कृषक कांग्रेस महाधिवेशन में हमें डिसिटिंग्यूस सर्विस अवार्ड-2004 से सम्मानित किया। किसानों और कृषि वैज्ञानिकों से खचाखच भरे हुए सभागार को संबोधित करते हुए डॉ0 बृजेश कान्त द्विवेदी ने कहा कि इलाहाबाद के हिंदुस्तानी एकेडमी, विज्ञान परिषद्, हिन्दी साहित्य सम्मेलन सहित अन्य साहित्यिक सामाजिक संस्थाओं को भी अपनी ओर से रचनाकार को सम्मानित कर साहित्य की नगरी इलाहाबाद के गौरव को बढ़ाने के प्रति गंभीरता से सोचना होगा। ●

भारत का नवनिर्माण एवं दीनदयाल उपाध्याय

—साहित्य अमृत से साभार

—महेश चंद्र शर्मा

पं.दीनदयाल उपाध्याय आजाद भारत के युग ऋषि थे। मानवीय सुख के संधान की भारतीय परंपरा के वे अन्वेषक थे। वे सृष्टि की समग्रता को 'विराट्' के रूप में देखते थे तथा चतुष्पुरुषार्थों की संसिद्धि के आकांक्षी थे। वे जानते थे कि काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व मत्सर के षट् 'विकारों' से आक्रांत मानव की सुख-यात्रा सरल रेखीय नहीं है। इसे सरल रेखीय बनाने के लिए विकारों का शमन आवश्यक है। वे मानते हैं कि 'संस्कारों' द्वारा विकारों का शमन आवश्यक है। वे मानते हैं कि 'संस्कारों' द्वारा विकारों का शमन संभव है। अतः वे भारत के नव-निर्माण का मार्ग राजनीति नहीं, वरन् संस्कृति में खोजते थे। वे स्वयं राजनीतिक नायक थे, लेकिन सामान्य अर्थों में नेता नहीं थे। उन्होंने अपने स्वयं के लिए कहा था, "मैं राजनीति में संस्कृति का राजदूत हूँ।" तथा अपने साधनभूत भारतीय जनसंघ के लिए कहा था, "जनसंघ एक अलग प्रकार का दल है। किसी भी प्रकार सत्ता में आने की लालसावाले लोगों का झुंड नहीं है। जनसंघ एक दल नहीं, वरन् आंदोलन है। यह राष्ट्रीय अभिलाषा का स्वयंस्फूर्त निर्झर है। यह राष्ट्र के नियत लक्ष्य को आग्रहपूर्वक प्राप्त करने की आकांक्षा है।"[1] वे संस्कृति के अधिष्ठान पर भारत के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक ढाँचे की पुनर्रचना चाहते थे—"जनसंघ मूलतः संस्कृतिवादी है। संस्कृति की आधारशिला पर हमारा आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक चिंतन खड़ा है।"[2]

दीनदयाल उपाध्याय यह मानते हैं कि चतुष्पुरुषार्थों की संसिद्धि से ही मानव सुखी हो सकता है। एकांगी विकास-दृष्टियाँ मानव को सुखी नहीं बनातीं, वरन् सुख का छलावा करती हैं। उन्होंने मानव को 'एकात्म मानव' के रूप में पहचाना। उनका मानव न केवल 'व्यष्टि' है तथा न केवल समष्टि ही है, वरन् व्यष्टि और समष्टि की एकात्मता में से मानव उद्भूत होता है। व्यक्ति एवं समष्टि भी समग्रता की द्योतक नहीं है। दीनदयाल उपाध्याय इन दोनों संज्ञाओं के ऊपर सृष्टि एवं परमेष्टि का वर्णन करते हैं। मानव का सुख इन चारों संज्ञाओं अर्थात् व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि एवं परमेष्टि की सांगोपांग एकात्मता में से उद्भूत होता है। व्यक्ति एवं समष्टि की एकात्मता में से उद्भूत मानव सृष्टि एवं परमेष्टि से निरपेक्ष नहीं रह सकता। इन चतुर्विध संज्ञाओं की एकात्मता से ही मानव चतुष्पुरुषार्थों को प्राप्त करने का अधिकारी बन सकता है। दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तिवादियों की विचार स्वातंत्र्याकांक्षा एवं समाजवादियों की रोटी, कपड़ा और मकान की आकांक्षाओं को परिस्थिति-सापेक्ष एवं एकांगी मानते हैं। वे परिस्थिति-निरपेक्ष मानवीय आकांक्षा के रूप में चतुर्विध पुरुषार्थों का वर्णन करते हैं, "जितनी भौतिक आवश्यकतायें हैं, उनकी पूर्ति का महत्व हमने स्वीकार किया है; परंतु उन्हें सर्वस्व नहीं माना। मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की आवश्यकताओं की पूर्ति, उसकी विविध कामनाओं, इच्छाओं तथा एषणाओं की संतुष्टि और उसके सर्वांगीण विकास की दृष्टि से व्यक्ति के सामने कर्तव्य के रूप में चतुर्विध पुरुषार्थ की कल्पना रखी गई है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पुरुषार्थ हैं। पुरुषार्थों का अर्थ उन कामों से है जिनसे पुरुषत्व सार्थक हो। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनकी इच्छा मनुष्य में स्वाभाविक होती है। उनके पालन से उसको आनंद प्राप्त होता है।"[3]

पश्चिम के विचारों ने जिस प्रकार मानव को व्यक्ति एवं समाज में विभक्त किया है, उसी प्रकार उसने मानव को भौतिक एवं अध्यात्म में बाँट दिया है। सेक्यूलरवाद मानव की आध्यात्मिकता का निषेध करता है। दीनदयालजी इस बँटवारे से भी असहमत हैं। वे भौतिकता एवं आध्यात्मिकता को भी एकात्मता व समग्रता की दृष्टि से देखते हैं। मानव न तो निपट भौतिक प्राणी है तथा न ही नितांत आध्यात्मिक। वह आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों हैं। धर्म इन दोनों तत्वों का एकात्म करता है—'यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि स धर्मः', अर्थात् जिससे भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त हो वह धर्म है। अतः पं.दीनदयाल उपाध्याय भारत में धार्मिक समाज का उन्नयन चाहते हैं। भारत के पाश्चात्य शिक्षित लोगों ने धर्म को संप्रदाय एवं कर्मकांड मान लिया है। दीनदयाल

इसे दुर्भाग्यपूर्ण मानते थे।

"दैशिक शास्त्रानुसार परस्पर प्रत्यक्षी सहज गुणों की साम्यावस्था की धारणा, अर्थात् मनुष्य में स्वभाव से अथवा सन्निकर्षों के कारण जो अनेक प्रतिद्वंद्वी गुण हो जाते हैं, उनका साम्य बनाए रखना 'धर्म' कहा जाता है।"[4] (सहज गुण प्रतिद्वंद्वी होते हैं यथा विवेक एवं तृष्णा) परस्पर विरोधी लगनेवाले सहज गुणों में सामंजस्य कैसे हो, इसके लिए धर्म का संधान करना पड़ता है। दीनदयाल उपाध्याय के विचारक साथी दत्तोपंत ठेंगड़ी इस संदर्भ में लिखते हैं—"आज मानव के सम्मुख अनेक मूलभूत एवं विस्मयकारी समस्याएँ उपस्थित हैं। उदाहरणार्थ निम्नलिखित विरोधी लगनेवाले, लेकिन वांछनीय प्रवृत्तियों में सामंजस्य कैसे हो—

—वैयक्तिक स्वातंत्र्य के साथ सामाजिक अनुशासन,
—वैयक्तिक विकास की प्रेरणा के साथ सामाजिक समता का आग्रह,
—आर्थिक विकास के साथ सामाजिक न्याय,
—मूलभूत जैविक एकता के साथ दृश्यमान विभिन्नता,
—राज्याधिकार के साथ औद्योगिक एवं नागरिक स्वशासन,
—व्यवस्था के साथ सहजता,
—समाज-व्यवस्था के साथ राज्य-विहीनता,
—आत्म संयम के साथ आत्म प्रकाशन,
—विवेकीकरण के साथ बुद्धि, मर्यादा एवं चेतना,
—भौतिक अग्रता के साथ आध्यात्मिक उत्तोलन,
—विशेषज्ञता के साथ समग्र दृष्टि,
—राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता के साथ समग्र दृष्टि।

इस प्रकार, दूसरी समस्या है कि निम्नलिखित को कैसे सुनिश्चित करें—

—स्वेच्छाचारिता-विहीन स्वातंत्र्य,
—सैनिकीकरण-विहीन अनुशासन,
—विशेषाधिकार-विहीनप्रतिष्ठा,
—एकरूपता-विहीन एकता,
—गतिहीनता-मुक्त स्थायित्व,
—जोखिम-विहीन गतिशीलता,
—सत्तावाद-विहीन राज्याधिकार,
—मानवीयता क्षति-मुक्त औद्योगिक प्रगति,
—अनगढ़ भौतिकतावाद-विहीन भौतिक समृद्धि,
—क्षितिजीय विभाजन-विहीन अनुलंब समाज व्यवस्था,
—सकेंद्रीयता-विहीन मानववाद।

इसी तरह राष्ट्रीय धरातल पर अनेक भीषण एवं चुनौतीपूर्ण समस्याएँ हैं। उदाहरणार्थ निम्नलिखित में कैसे सामंजस्य करें—

—अद्यतन आधुनिक ज्ञान के साथ रोजगार अवसरों की वृद्धि,
—विकेंद्रित उत्पादन प्रक्रिया के साथ उत्पादन क्षमता में अभिवृद्धि,
—राष्ट्रीयकरण के साथ लोक-उत्तरदायित्व,
—शहरीकरण की प्रगति के साथ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि,
—स्थानीय स्तर पर सूक्ष्म (माइक्रो) आयोजना के साथ राष्ट्रीय स्तर पर वृहद् (मेक्रो) आयोजना,
—अपनी पृथक् पहचान की सुरक्षा के साथ प्राकृतिक जन-समुदायों की एकात्मता,
—भारतीय जीवन-मूल्यों के साथ आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी अग्रता,
—युगधर्म के साथ सनातन धर्म।

मानवीय लक्ष्य कैसे प्राप्त करें—

—विश्व राज्य, जो विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों के उन्नयन तथा सहयोग के आधार पर समृद्ध एवं विकसित हो और
—मानव धर्म, जो भौतिकवाद सभी पंथों की पूर्णता के साथ समृद्ध एवं विकसित हो।

पंडितजी इस बात के कायल थे कि ये मूलभूत समस्याएँ 'भारतीयत्व' के आधार के बिना नहीं सुलझाई जा सकतीं।"[5]

भारत के नव-निर्माण का अधिष्ठान 'भारतीयता' ही होना चाहिए। पश्चिमी साम्राज्यवाद ने जो विश्व-दृष्टि हम पर आरोपित की है, उसी के आधार पर हम आजादी के बाद भिन्न-भिन्न प्रयोग कर रहे हैं। पाश्चात्य "लोक कल्याणकारी राज्य" अवधारणा का एक इतिहास है। भारत में न तो राज्य केंद्रित समाज रहा है, न संपूर्ण समाज-व्यापी कोई राज्य रहा है। राज्य-नियंत्रित या राज्य-नियमन के अंतर्गत सामाजिक नव-निर्माण के प्रयत्नों से हमारी साम्राज्यवादकालीन गुलामी और गहरी

(शेष पृष्ठ 13 पर)

आधुनिक मीडिया में हिंदी भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ।

–डॉ0 परमानंद पांचाल

समाचार माध्यमों में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। भाषा ही विचारों के आदान-प्रदान का सहज माध्यम है। भाषा एक समाज-सापेक्ष क्रिया है, एक सामाजिक व्यवहार है। अतः परिवर्तनशील समाज में भाषा का स्वरूप भी अनुकूलन परक और परिवर्तनीय होता है। इसे हम भाषा का विकासात्मक स्वरूप कहते हैं। कबीर ने हिंदी भाषा को "बहता नीर" की संज्ञा दी थी जो भाषा की एक सटीक और सुस्पष्ट परिभाषा ही है। हिंदी भाषा अपने विकास के लगभग एक हज़ार वर्षों के इतिहास में निरन्तर बदलती परिस्थितियों बाध्यताओं और विवशताओं के उतार-चढ़ाव को पार करती हुई सुरसरिता के अजस्र प्रवाह की भाँति अविरल गति से बढ़ती रही है। हिंदी की प्रकृति सबको साथ लेकर चलने की रही है। विभिन्न भाषाओं के सम्पर्क में आने से इसने अनेक देशी और विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् किया और कर रही है। इससे इसकी विकास गति प्रबल हुई, सम्प्रेष्णीयता बढ़ी और यह एक व्यापक भाषा के रूप में विश्व के पटल पर उभरी। इसे सन्तों और महात्माओं, व्यापारियों ने ही अपने विचारों का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी इसकी महती राष्ट्रीय भूमिका रही। गांधीजी और राष्ट्र के अग्रणी नेताओं ने राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी पहचान की। इसी दौरान हिंदी के अनेक समाचार पत्रों का जन्म हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी के समाचार पत्रों का राष्ट्रीय आंदोलन को तेज धार देने में अहम् रोल रहा। सच पूछिए तो इसके मानक स्वरूप का विकास भी 19 वीं सदी में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही हुआ। 1826 में उदंत मार्तंड से लेकर हिंदी में जो पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं उन्हीं से हिंदी का एक परिनिष्ठित स्वरूप भी स्थिर हुआ।

आज हम वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। 20 वीं सदी विज्ञान की सदी थी और अब 21 वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी की है। कम्प्यूटर द्वारा संप्रेषण के साधनों में एक नए युग का सूत्रपात हुआ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसकी कार्यक्षमता कितनी विशाल एवं प्रभावपूर्ण है।

आज कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी दोनों एक दूसरे के पूरक बन चुके हैं। सूचना प्रौद्योगिकी क्या है ? सूचना को एकत्रित और संसाधित कर उसके संप्रेषण की प्रौद्योगिकी ही सूचना प्रौद्योगिकी है।

दूसरे शब्दों में भाषा में सूचना को कोडित, संसाधित, संचारित और इंटरनेट पर, ब्राउजिंग करने के साधन ही सूचना प्रौद्योगिकी की विषय वस्तु हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के दो आधार हैंः-

1. प्रिंट मीडिया; और
2. इलेक्ट्रोनिक मीडिया।

सूचना प्रौद्योगिकी में माइक्रो-इलेक्ट्रानिक तथा इन्फो-इलेक्ट्रानिक तकनीकों का समावेश होता है। इसमें सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनों का प्रयोग शामिल है। सूचना प्रौद्योगिकी अत्यधिक तेज गति से परिवर्तित होने वाली प्रौद्योगिकी है, जो बहुत ही कम समय में उत्पादों को व्यापक रूप में प्रचलित बना देती है। किसी भाषा को व्यापकता प्रदान करने में सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है। ऑडियो-वीडियों उपकरण अब पत्रकारिता के अभिन्न अंग बन चुके हैं। दूरदर्शन ने जहाँ पत्र को ग्लेमर दिया है, वहीं कम्प्यूटर, इन्टरनेट व अत्याधुनिक साधनों ने समाचार की गति आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा दी है। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, कम्प्यूटर, टेलीफोन, फैक्स, ई-मेल, इन्टरनेट आदि सभी का भाषा के साथ गहरा सम्बंध है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, समाचारों का अखबारों में यथास्थान संकलन और उन्हें चित्रों सहित प्रस्तुत करने में कम्प्यूटरों की सहायता ली जा रही है। कम्प्यूटर द्वारा ही हम किसी समाचार, सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक इन्टरनेट और ई-मेल द्वारा प्रेषित कर सकते हैं।

कम्प्यूटर का आविष्कार पश्चिमी देशों में हुआ था। कम्प्यूटर की भाषा पहले अंग्रेजी ही थी। जब यह विकासशील देशों में आया तो लोगों को भ्रम हुआ कि कम्प्यूटर की भाषा अंग्रेजी होने से उनकी भाषाओं का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। किन्तु कम्प्यूटर तो एक यंत्र है, जो किसी प्रकार की सीमाएँ स्वीकार नहीं करता। अंग्रेजी में

इसकी लोकप्रियता को शीघ्र ही अन्य भाषाओं ने भाँप लिया और अपनी-अपनी भाषाओं में इसका प्रयोग आरंभ किया। आज 60 से भी अधिक भाषाओं का कम्प्यूटर पर प्रयोग हो रहा है। हिंदी भी इस दिशा में पीछे नहीं रही। फिर भी, हिंदी भाषा के विश्व में गौरवपूर्ण स्थान को देखते हुए हम कम्प्यूटर के क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाए हैं। इसके मार्ग में सबसे बड़ी बाधा अंग्रेजी की दासता की मानसिकता वाले वे लोग हैं, जो अंग्रेजी के वर्चस्व को बनाए हुए हैं। वे हिंदी के प्रयोग से कतराते हैं और वे समय रहते हिंदी के विकास के लिए उपलब्ध आधुनिक और अद्यतन उपकरणों और प्रविधियों के प्रयोग की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दे रहे हैं। हम कम्प्यूटर का सफल और अधिकतम प्रयोग कर सकें, इसके लिए भाषा के मानकीकरण की सबसे अधिक आवश्यकता है। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने वर्णमाला और वर्तनी के मानकीकरण की दिशा में कुछ कार्य किया है, जिसे व्यापक रूप से मान्यता मिलनी चाहिए। भाषा विकास के लिये मानकीकरण एक अनिवार्य शर्त है। इसके बिना विश्व की भाषा की दौड़ में हिंदी पीछे रह जाएगी और हम अंग्रेजी के पिछलग्गू ही बने रहेंगे।

हिंदी अब एक विश्व भाषा के रूप में विकसित हो रही है। भाषाई दृष्टि से देखा जाए तो विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या दूसरे स्थान पर है। 1999 में मशीन ट्रान्सलेशन सम्मिट में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने जो भाषाई आँकड़े प्रस्तुत किए थे, उनके अनुसार विश्व भर में चीनी बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है। अंग्रेजी तीसरे स्थान पर ही रह जाती है।

हिंदी भाषा जैसाकि पहले कहा गया है सदैव परिवर्तनशील और विकासशील रही है। कम्प्यूटर और इंटरनेट के आ जाने के बाद इसमें परिवर्तन कल्पनातीत गति से हो रहा है, जो स्वाभाविक ही है। ज्ञान-पोषित समाज में आम जनता की सक्रिय भागीदारी होती है। इसे बढ़ाने और समाज द्वारा प्रौद्योगिकी को तेजी से आत्मसात् किये जाने के लिये आवश्यक है कि ज्ञान के आदान प्रदान में कोई बाधा न आये। हमारी सूचना प्रौद्योगिकी का विकास अंग्रेजी केन्द्रित होने के कारण देश में इसका विकास तेज़ी से नहीं हो पा रहा है। हिंदी में इन्टरनेट का प्रयोग देरी से अवश्य हुआ, किंतु इसके प्रयोग की संभावनाएँ बहुत हैं।

जहाँ तक हिंदी भाषा का प्रश्न है इसके दो स्वरूप हैं। एक परम्परागत साहित्यिक और दूसरा प्रयोजनमूलक। संविधान में हिंदी को राजभाषा घोषित किए जाने के बाद हिंदी की दुहरी भूमिका हो गई है। पहली साहित्यिक, दूसरी प्रशासनिक और बहु प्रयोजनीय, जो आज के युग में अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज के उद्योग, प्रौद्योगिकी प्रधान है। डॉ0 ओमविकास ने आई.एन.एस.डी.ओ.सी. के आंकडों के आधार पर बताया है कि विडंबना यह है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रति वर्ष 2.5 करोड़ पृष्ठों की शोध परक एवं विकास परक जानकारी जुड़ती है, लेकिन हिंदी में नगण्य है। इस विकट और विकराल परिस्थिति से हिंदी जगत को निपटना होगा, नहीं तो राष्ट्रीय क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, लोगों की भागीदारी का अभाव रहेगा और देश विकसित नहीं हो सकेगा, जैसाकि हमारी परिकल्पना है कि सन् 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बनकर उभरेगा।

कहना न होगा कि हिंदी निदेशालयों और संस्थानों द्वारा प्रतिपादित हिंदी सरल और व्यावहारिक नहीं हो पा रही है। हम अभी भी क्लिष्ट, दुरूह और भारी भरकम शब्दों के प्रयोग का मोह नहीं छोड़ पा रहे हैं। जन सामान्य की भाषा से कटकर हिंदी का विकास बहुत ही दुष्कर है।

1983 में तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में पत्रकारिता के सम्बंध में कहा गया था कि आम आदमी की भाषा ही पत्रकार की भाषा होनी चाहिए। इसे मात्र व्यावसायिक नहीं बनना चाहिए। इसमें सत्य को ढूंढने की सहज प्रवृत्ति का होना आवश्यक है। हमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग में आ रहे तकनीकी और प्रौद्योगिकी के शब्दों को ग्रहण करने में संकोच नहीं होना चाहिए। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी की शब्दावली के सम्बन्ध में पहले ही स्थिति को स्पष्ट कर दिया गया है किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम जान बूझकर अंग्रेजी के ऐसे बेमेल शब्दों का प्रयोग करें, जो जन सामान्य की भाषा से कट कर रह जाएँ। जो शब्द हिंदी में पहले से ही प्रयोग में आ रहे हैं, उनके बदले जबरदस्ती अंग्रेजी के शब्दों का

प्रयोग फूहड़पन नहीं तो क्या है ? मीडिया के लिए इस सम्बन्ध में सतर्कता बरतनी आवश्यक है। समाचार-पत्र, भाषा और ज्ञान के प्रेषक होते हैं जो समाज के छोटे-बड़े सभी वर्गों तक पहुँचते हैं। पाठक उनकी भाषा को मानक मान कर उनका अनुकरण करते हैं। किंतु आज के वैश्वीकरण के युग में समाचार पत्रों के सम्पादक विवश नज़र आते हैं। वे भाषा और साहित्य पर ध्यान न देकर अपने स्वामियों के हितों को अधिक प्रश्रय देते हैं। भाषा तो गौण रह जाती है। समाचार पत्र उनके आर्थिक हितों की रक्षा करते हैं। सामाजिक या भाषाई पक्ष अब उनके लिए इतने महत्वपूर्ण नहीं रह गए हैं। यहाँ अनेक उदाहरण हिंदी के दैनिक पत्रों से दिए जा सकते हैं। जैसे 2-मार्च 2004 के नवभारत टाइम्स में एक शीर्षक है– "टीन एजर्स" के बीच तेज़ी से पॉपुलर हो रहा है "वेब"। यह पत्र गाँव के लोग भी पढ़ते हैं। वे इसका अर्थ निकालेंगे ? क्या "टीन एजर्स", पापुलर आदि के लिए हिंदी में शब्द ही नहीं हैं ? यह तो एक उदाहरण है। ऐसे अनेक नमूने इस पत्र में सर्वत्र पढ़ने को मिलेंगे। जैसे 'विज्ञान डॉक्युमेंट' का ड्राफ्ट तैयार। अन्य भाषाओं के शब्द लेना बुरा नहीं है। हिंदी ने तुर्की, अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, फ्रेंच और अंग्रेजी के अनेक शब्दों को पहले से ही ग्रहण किया है। जब अपनी भाषा में उपयुक्त शब्द उपलब्ध हो तो फिर भाषा को दुरूह बनाने से क्या लाभ है ? मीडिया कुछ विशेष वर्ग के लिए नहीं है। लोकतंत्र में लोक भाषा ही जनजन तक पहुँचने का माध्यम है।

यह सही है कि आज वैश्वीकरण अथवा 'भूमंडलीकरण' भूमंडलीकरण के रूप में आ रहा है। नए–नए बाजार तलाशे जा रहे हैं। जब अंग्रेजी में विज्ञापन से माल नहीं बिक पाता, तो विवश होकर देश के अधिकांश लोगों की भाषा हिंदी का सहारा लेना पड़ता है। अंग्रेजी के अनेक प्रमुख पत्रों का अपने हिंदी संस्करण निकाला जाना इसका स्वतः प्रमाण है। हिन्दुस्तान नवभारतटाइम्स, जनसत्ता, ट्रिब्यून, आउट लुक, इंडिया टुडे आदि पत्र हिंदी में भारी मात्रा में प्रकाशित होते हैं। भारतीय प्रेस 2002 की सूचना के अनुसार भारत में सबसे अधिक अर्थात् 20,589 समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित होते हैं। अंग्रेजी में केवल 7,596 समाचार पत्र छपते हैं। दैनिक समाचार पत्रों में भी हिंदी का स्थान प्रथम है। 2001 में 2507 दैनिक पत्र हिंदी में निकलते थे। परिचालन संख्या की दृष्टि से भी हिंदी दैनिकों का स्थान सबसे ऊपर अर्थात् 40.42 प्रतिशत रहा। हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ राष्ट्रीय स्तर पर भारत के अनेक राज्यों से प्रकाशित होती हैं। विदेशों से भी हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ प्रचुर मात्रा में निकल रही हैं अमेरिका की पत्रिका 'स्पेन' अब हिंदी में भी प्रकाशित होती हैं। ब्रिटिश उच्च आयोग द्वारा 'ब्रिटिश समीक्षा' हिंदी में निकलती है। क्योंकि हिंदी पाठकों की संख्या अधिक है। समाचार पत्रों के अतिरिक्त अब दवाईयों की शीशियों, श्रृंगार-प्रसाधनों, साबुनों आदि पर हिंदी में भी लिखा जाने लगा है। हिंदी का बाज़ार विस्तृत है। ये हिंदी के लिए शुभ लक्षण हैं। मोबाइल फोन पर अब हिंदी भी सुनने को मिलने लगी है। मैंने देखा है दिल्ली से अमरीकी विमान सेवाओं में उद्घोषिकाएँ सूचनाएँ हिंदी में भी देती हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया में दूरदर्शन के माध्यम से भारत में 'स्टार-प्लस', स्टार-न्यूज, सोनी, डिस्कवरी, एनिमल वर्ल्ड, आदि तमाम चैनलों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करना प्रारंभ किया है। इन सभी चैनलों के कार्यक्रम अंग्रेजी की चास्नी के साथ यहाँ अवतरित हुए थे, किंतु इन्हें विवश होकर हिंदी की ओर मुड़ना पड़ा। इन्हें तो अपने श्रोताओं की संख्या बढ़ानी थी। अपने विज्ञापन आदि दूर-दराज तक पहुंचाने थे। बी.बी.सी. तो काफी दिनों से हिंदी में समाचार देती आ रही है। आज इलेक्ट्रोनिक मीडिया टी.वी. चैनलों तथा मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा बन गई है। अनुमान है कि कुल विज्ञापनों का 75 प्रतिशत हिंदी माध्यम में है। 'कौन बनेगा करोड़ पति' ने रिकार्ड तोड़ लोकप्रियता प्राप्त की थी। इसमें भागीदारिता निभाने वाले देश के कोने-कोने के लोग थे।

जहाँ तक सिनेमा और फिल्म जगत का प्रश्न है, हिंदी प्रचार-प्रसार में इनका सबसे बड़ा हाथ है। हिंदी न जानने वाले भी हिंदी फिल्मों को देखने में रुचि लेते है। इनसे हिंदी की भारी लोकप्रियता बढ़ी है। इसमें कोई संदेह नहीं है। फिल्मी गीत अनेक देशों में भारत के

बाहर भी बड़े चाव से सुने जाते हैं। यहाँ यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि कभी-कभी हिंदी फिल्मों के गीतों में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हिंदी भाषा की सहज प्रकृति को ही बिगाड़ देता है। हिंदी में उपलब्ध सरल शब्दों के बदले अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अटपटा, तो लगता ही है हास्यास्पद भी बन जाता है, जैसे 'यह दिल मांगे मोर'। यहाँ 'अधिक' के लिए 'मोर' का प्रयोग सुनते ही ध्यान पहले 'मयूर' पक्षी की ओर जाता है। बाद में अधिक होने की ओर। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं। यदि मीडिया और सिनेमा जगत् के लोग हिंदी की सहज और स्वाभाविक प्रकृति को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग करते रहें तो आधुनिक मीडिया में हिंदी भाषा के विकासात्मक स्वरूप की भारी संभावनाएँ निहित हैं।

संविधान के अनुसार हिंदी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी भारत सरकार की भी है। किसी ने ठीक ही कहा कि कमज़ोर राष्ट्र कमज़ोर भाषा का निर्माण करते हैं। **(weak nations produce weak languages)** इसलिए सरकार को हिंदी के लिए अद्यतन और नवीनतम आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने की ओर विशेष ध्यान देना होगा। साथ ही शब्दों और फास्ट आदि साधनों के मानकीकरण पर भी समय रहते गौर करना होगा। नहीं तो, हिंदी भाषा उन्नति की दौड़ में पिछड़ जाएगी और देश अपनी भाषा के अभाव में सदैव पराश्रित बना रहेगा। हम अंग्रेजी की दासता के बोझ से भावी पीढ़ी को मुक्त नहीं करा पाएँगे, क्योंकि भाषाई विकास और आर्थिक समृद्धि एक दूसरे से जुड़े होते हैं। ■

(भारत का नवनिर्माण एवं दीनदयाल उपाध्याय - पृष्ठ 9 का शेष)

हुई है। जब अंग्रेजों का साम्राज्यवादी शासन कायम था तब समाज के एक बड़े वर्ग में अंग्रेजियत या पाश्चात्य अवधारणाओं के प्रति एक वितृष्णा का भाव था, चाहे वह प्रतिक्रियावश ही था, लेकिन आजादी के बाद अंग्रेजकालीन सभी व्यवस्थाओं की निरंतरता ने उस प्रतिक्रिया के भाव को भी समाप्त कर दिया है। अंग्रेजी वर्चस्वित इन व्यवस्थाओं ने भारतीय भाषाओं के अस्तित्व पर प्रहार किया है।

भारतीय मुहावरे में न सोच सकनेवाले लोग आज हमारे नियामक हैं। दीनदयालजी भाषा को केवल संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं मानते। वे कहते हैं, "भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, वह स्वयं भी एक अभिव्यक्ति है। भाषा का एक-एक शब्द, वाक्य, रचना, मुहावरे आदि के पीछे समाज जीवन की अनुभूतियाँ, राष्ट्र की घटनाओं का इतिहास छिपा हुआ है। फिर स्वभाषा व्यक्ति को अलग-अलग प्रकोष्ठों में नहीं बाँटती।"[6] अंग्रेजी भाषा के दुष्परिणामों की ओर संकेत करते हुए उपाध्याय कहते हैं, "आज शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजी के प्रमुख एवं एकाधिकार ने हमें इन भाषाओं (विश्व की रूसी, फ्रेंच, जर्मन आदि अन्य भाषाओं) से भी दूर कर दिया है। फलतः आज हम दुनिया को अंग्रेजी भाषा-भाषी जगत् के चश्मे से देख रहे हैं। अंग्रेजी हमको दुनिया के साथ जोड़नेवाली कड़ी नहीं, बल्कि बहुत बड़े भाग से तोड़नेवाली सिद्ध हो रही है।"[7]

चाहे समाजवादी समाज की संरचना हो, चाहे व्यक्तिवादी लोकतंत्र का संप्रेषण हो, चाहे सेक्यूलरवाद का आरोपण हो, चाहे मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रयोग हों, चाहे राष्ट्रीयकरण के नाम पर सरकारीकरण की धूम हो तथा इन प्रयोगों से निराश होकर चाहे आर्थिक सुधार, उदारवाद एवं भूमंडलीकरण की अंधी नकल हो—ये सभी प्रयोग भारत को भारत से काटते हैं। दीनदयालजी का मूल मंत्र है, सभी व्यवस्थाओं का भारतीयकरण होना चाहिए। उनकी विख्यात उक्ति है, "स्वदेशी को युगानुकूल एवं विदेशी को स्वदेशानुकूल बनाकर ग्रहण करें।" यह भारतीयकरण का सूत्र है। दीनदयाल ने उस जनाकांक्षा को स्वर दिया, जिसको सामान्य जन महसूस तो करता है, लेकिन स्वर नहीं दे सकता। उसकी इसी अवस्था का लाभ पाश्चात्य व्यवस्थाओं को आरोपित करनेवाले लोग उठाते हैं। अतः उन्होंने 'लोकमत परिष्कार' के अभियान का आह्वान किया। दीनदयाल की कल्पना का नव-निर्माण राष्ट्रीय पुनर्निमाण में अंतर्निहित है। 'परम वैभव' के उस सपने को साकार करने के लिए हमें सत्ता नहीं वरन् साधना पथ का अनुयायी होना होगा। ■

डॉ0 बालशौरी रेड्डी : मेरे आत्मीय मित्र

–डॉ0 सूर्यनारायण रणसुभे/लातूर/ महाराष्ट्र

यूँ तो जीवन के प्रत्येक मोड़ पर व्यक्ति अनेक व्यक्तियों से टकराता है, क्षणभर के लिए एक दूसरे की ओर देखना होता है, अथवा इनमें से किसी के साथ एक दिन, दो दिन अथवा सप्ताह दो सप्ताह भी साथ रहने का अवसर मिलता है, परंतु बाद के जीवन की आपाधापी में इनमें से बहुत कम स्मृति में शेष रह जाते हैं। इनमें से अपवादात्मक कोई एक ऐसा व्यक्ति भी होता है, जो स्मृतिपटल पर इस रूप में बिंबित हो जाता है कि आप उसे कभी भूल ही नहीं सकते। डॉ0 बालशौरी रेड्डी उन अपवादात्मक व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्हें मैं कभी भूल ही नहीं सकता। संभवतः आज से दसेक वर्षों पूर्व उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में मेरी उनसे पहली भेंट हुई। इसके पूर्व उनकी साहित्यिक कृतियों से मैं पाठक के रूप में जुड़ा हुआ था। उनका नाम तो बचपन से पढ़ रहा था। 'चंदामामा' के संपादक के रूप में उनकी कहानियाँ, उनके उपन्यास युवावस्था में पढ़ चुका था। इस नाम के प्रति मन में जबरदस्त उत्सुकता थी। एक हिंदीतर भाषी व्यक्ति इतनी सहज हिंदी लिख लेता हैं और हिंदी प्रदेश में साहित्यकार के रूप में अपनी स्वतंत्र पहचान बना लेता है, इसीलिए एक हिंदीतर भाषी होने के कारण उनके प्रति मन में अभिमान भी था। बचपन से जिन्हें पढ़ते आया था, वे जब पहली बार जलगांव में दिखलाई दिए, तब उनसे मिलते समय, एक संकोच था, आदरयुक्त भय भी था। प्रत्यक्ष मिलने के बाद बातचीत के बाद लगा कि अरे, ये जितने श्रेष्ठ साहित्यकार हैं, उससे भी बढ़कर सहज मनुष्य हैं। कहीं पर कोई अहंकार नहीं, इतनी सरलता, इतनी सहजता ! मैं न केवल आश्चर्यचकित हुआ अपितु अभिभूत था। मराठी अथवा हिंदी में मैंने ऐसे बहुत कम साहित्यकारों को पाया है, जिनमें इतनी उत्कट मानवीयता और सहजता हो। विशेषतः हिंदी भाषी लेखकों और समीक्षकों में गजब के पाखंडपन का अहसास कुछ ही देर में होने लगता है। अर्थात् वहाँ भी श्री कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, शिवकुमार मिश्र जैसे लेखक-समीक्षक हैं पर अपवाद रूप में। तेलुगु और हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक होने के बावजूद डॉ0 रेड्डी अपने संपर्क में आए किसी भी व्यक्ति को इसका अहसास नहीं होने देते कि वे औरों से अलग हैं। वे जिस किसी से भी मिलते हैं, उसके हो जाते हैं। इसलिए एक लेखक के रूप में वे जितने विशिष्ट हैं, उतने ही एक मनुष्य के रूप में सहज और सरल हैं। सहजता और विशिष्टता का विलक्षण समन्वय उनके व्यक्तित्व में हुआ है।

अपनी सृजनशीलता के आधार पर वे प्रतिष्ठित हैं। हिंदी के प्रति उनकी लगन, उनकी निष्ठा गजब की है। जलगाँव में भारतीय साहित्य पर आपने जो वक्तव्य दिया, उससे उनकी जीवन दृष्टि का पता चलता है। वे भारतीय साहित्य में एक विलक्षण एकता का अनुभव करते हैं और इसे अनेक प्रमाणों द्वारा स्थापित भी करते हैं। वास्तव में डॉ0 बालशौरी रेड्डीजी तथा उनकी पीढ़ी ने साहित्य के क्षेत्र में जो काम किया है, वह आगे आनेवाली कई पीढ़ियों के लिए दिशा निर्देशन करता रहेगा। तेलुगु से अनेक कृतियों का हिंदी में अनुवाद करते हुए उन्होंने एक ओर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है तो दूसरी ओर हिंदी भाषी पाठकों को तेलुगु प्रतिभाओं के साथ जोड़ा है। ठीक इसी प्रकार हिंदी की उत्कृष्ट कृतियों का तेलुगु में अनुवाद कर आपने तेलुगु साहित्य को समृद्ध किया है और तेलुगु भाषियों को हिंदी की प्रतिभाओं के दर्शन कराए हैं।

ऐसा बहुत कम बार हुआ है कि एक सफल अनुवादक एक सफल सृजनात्मक लेखक भी हो। यूरोप में ऐसा है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में हिंदी के कई सृजनशील लेखकों ने अनुवादक की भूमिका भी निभाई है। परंतु स्वतंत्रता के बाद कुछ ऐसा हुआ कि सृजनशील लेखक अनुवाद-प्रक्रिया से दूर रहे और अनुवाद करनेवाले उसमें इतने

उलझ गये कि उन्होंने स्वतंत्र रूप से लिखा ही नहीं और लिखा भी होगा तो उसकी कोई नोटिस नहीं ली गई। कुछ कवियों और लेखकों ने अनुवाद किए भी हों तो केवल अंग्रेजी से। उदा : हरिवंशराय बच्चन। एक भारतीय भाषा का लेखक दूसरे भारतीय भाषा की रचनाओं को अपनी भाषा में लाता है, ऐसे उदाहरण अपवाद रूप में ही हैं। क्योंकि प्रतिष्ठित सृजनशील लेखक अनुवाद कार्य को दोय्यम दर्जे का काम मानते हैं। कम-से-कम मराठी में यह स्थिति है। आश्चर्य तो तब होता है जब ये प्रतिष्ठित लेखक अंग्रेजी कृतियों का अनुवाद करते हैं, तो उसमें विशेष कृतार्थता का अनुभव करते हैं और उनके पाठक भी उनकी ओर सम्मान से देखते हैं। परंतु वही लेखक दूसरी भारतीय भाषा से अनुवाद करने में अप्रतिष्ठा का अनुभव करते हैं। मेरे मन में डॉ0 बालशौरी रेड्डीजी के प्रति इसलिए अधिक श्रद्धा भाव है कि वे एक ही समय तीन महत्वपूर्ण भूमिकाएँ पूरी ईमानदारी और निष्ठा से निभाते रहे हैं। पहली और महत्त्वपूर्ण भूमिका सृजनशील लेखक की है। आपने हिंदी में उपन्यास लिखे, कहानियाँ लिखीं। सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों पर लिखे उनके उपन्यास और कहानियों में दक्षिण भारत सज़ीव हो उठा है। अपनी अनुभूति को एक ही समय वे हिंदी और तेलुगु में सहजता के साथ व्यक्त करते हैं। परिणामतः बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की उन्हें मानद् डीलिट् की उपाधि देकर उनका गौरव करना पड़ा। इतना बड़ा सम्मान शायद ही किसी भारतीय भाषा के लेखक को मिला हो। यह सम्मान उनकी सृजनधर्मिता का सम्मान था, ठीक उसी समय यह सम्मान समस्त हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों का भी था। सृजनशील लेखक के रूप में ही उनकी असली पहचान है। संभवतः वे इतने से संतुष्ट नहीं थे। उनके भीतर का सृजनशील लेखक एक सांस्कृतिक दूत बनने की इच्छा भी रखता है। इस कारण अपनी भाषा की उत्कृष्ट कृतियों को हिंदी में ले जाने का व्रत ही उन्होंने लिया। अपनी सृजनशीलता को हिंदी के माध्यम से व्यक्त करके आपने अपनी विशाल दृष्टि को हिंदी पर के अपने असाधारण अधिकार को साबित किया तो दूसरी ओर अनुवाद द्वारा दक्षिण को उत्तर से और उत्तर को दक्षिण से जोड़ने का काम भी किया। यह दूसरी भूमिका आज के इस संकुचित प्रादेशिकता की वृत्ति में प्रकाश का काम कर रही है। तीसरी भूमिका में वे तेलुगु के सृजनशील लेखक के रूप में तथा हिंदी से तेलुगु में अनुवाद करनेवाले अनुवादक के रूप में निभाते हैं। इस तीसरी भूमिका द्वारा आपने अपनी मातृभाषा के प्रति जो प्रेम है, प्रतिबद्धता है, उसे व्यक्त किया है।

एक अन्य महत्वपूर्ण भूमिका भी आपने निभाई है और वह है 'चंदामामा' के संपादक के रूप में। इस देश के करोड़ों बालकों को संस्कारित करनेवाली इस महत्वपूर्ण पत्रिका में आप संपादक रहे। आज घर-घर में बच्चों के मन में दूरदर्शन ने जो स्थान प्राप्त कर लिया है, कभी वही स्थान इस देश के करोड़ों बच्चों के मन में 'चंदामामा' के लिए था। इस पत्रिका ने भारत की प्राचीन कथाओं को-बेताल की कहानियाँ, पंचतंत्र की कहानियाँ-को फिर से पुनरुज्जीवित किया था। यह दृष्टि डॉ0 बालशौरी रेड्डीजी की ही थी।

इतने विविध स्तरों पर इतने वैविध्यपूर्ण लेखन-संपादक के बावजूद, सैकड़ों प्रकारों के सम्मानों के बावजूद उनके व्यक्तित्व में भी सहजता है, वह विलक्षण है। इस आयु में भी वे अत्यधिक सक्रिय हैं। वे केवल किताबें ही नहीं पढ़ते अपितु 'मनुष्य' को भी पढ़ते हैं। लोगों के बीच रहना, उन्हें सुनना, उनसे संवाद करना इसमें वे अधिक रहते हैं। इस कारण देश के विभिन्न विभागों में किसी न किसी बहाने जाते हैं। उनके मन, शरीर और मस्तिष्क इन तीनों में आज भी गजब की स्फुर्तिता है। प्रत्येक पीढ़ी के व्यक्ति के साथ वे सहजता से संवाद स्थापित कर लेते हैं। परिणामतः प्रत्येक को वे अपने लगते हैं। मुझ जैसा उनका स्नेही यही तो चाहेगा कि उन्हें लंबी उम्र मिले, उनके हाथ से और अधिक लेखन-कार्य हो, उन्हें और अधिक सम्मान प्राप्त हो। हम हिंदीतर भाषियों के लिए तो वे आकाशदीप की तरह हैं। ●

अयोध्याकांड का केवट प्रसंग

–शशिधर सिंह

तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। रामचरित मानस नाम के उनके सागर में प्रत्येक चौपाई लहर के समान बार-बार उठकर मानव क मन की मलिनता को धो देती है। तुलसी के प्रत्येक पात्र में 'चरित्र' 'शील' 'स्नेह' का सरस एवं रोचक वर्णन मिलता है। गोरखपुर से प्रकाशित 'कल्याण' पत्रिका पढ़ते वक्त चरित्र से संबंधित इस दोहे ने मन पर बड़ा प्रभाव डाला–

गिरि से गिरि पर जो गिरे मरे एक ही बार।
जो चरित्र गिरि ते गिरे बिगड़े जन्म हजार॥

राम उच्च चरित्रवान व्यक्ति थे। चरित्र से व्यक्ति देवता बन जाता है। स्वयं श्रीराम इसके साक्षी हैं। राम के साथ जुड़ा हुआ प्रत्येक पात्र देवत्व को प्राप्त करता है। इसलिए जब साकेत की रचना हुई कविवर गुप्त जी ने प्रारंभ में ही कहा था –

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है॥

अयोध्याकांड मानस का हृदयकांड माना जाता है। इसमें आत्मीयता, पवित्रता, सहनशीलता एवं सभ्यता का अनुपम वर्णन मिलता है। मानस का 'केवट प्रसंग' मार्मिक एवं विवेचन योग्य है।

वनगमन हेतु श्रीराम सीता तथा लक्ष्मण के साथ गंगातट पर आते हैं वहाँ केवट से उनकी मुलाकात होती है।

तुलसीदास के मन में राम के प्रति जो श्रद्धा एवं भक्ति थी उसको केवट के माध्यम से उन्होंने व्यक्त किया है। राम की महिमा अनंत एवं असीम है। राम साधारण मानव की भाँति कार्य करते हुए अपने चरित्र की छाप छोड़ते हैं। तुलसी कहतें हैं–

सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥

केवट निम्न कोटि का होकर भी श्रीराम का दर्शन करता है। भवसागर को पार करानेवाले श्रीराम आम आदमी की तरह गंगा पार करने केवट से नाव माँगते हैं। केवट प्रभु के चरणों को स्पर्श करना चाहता है। इसलिए वह बहाना बनाते हुये कहता है–

माँगी नाव न केवट आना।
कहई तुम्हार मरमु मै जाना॥
चरण कमल रज कहुँ सव कहई।
मानुष करनि मूरि कछु अहई॥

केवट पुण्यवान था। राम के दर्शन का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ। प्रभु का ऐसा सहज दर्शन मिलना जग में दुर्लभ माना जाता है। ऐसा अवसर जब केवट को मिला तो उसका पूरा लाभ केवट लूटना चाहता है। केवट जानता है कि प्रभु का चरित्र इतना पावन है जो पाहन में भी प्राण भरता है। तुलसी ने केवट के मुख से कहलवाया है–

छुअत सिला भई नारि सुहाई।
पाहन ते न काठ कठिनाई॥
तरनिऊ मुनि घरनी होई जाई।
बाट परई मोरि नाव उड़ाई॥

राम के चरणस्पर्श से अहल्या का शाप विमोचन हुआ था। केवट का कहना है मेरी नाव तो लकड़ी की है आपके चरण स्पर्श से मेरी नाव भी स्त्री हो गई तो मैं क्या करूँ ? इसी नाव से मेरी जीविका चलती है। आप अगर मेरे नाव में बैठना चाहते हैं तो मुझे आपके चरण धोने की अनुमति दीजिए। इससे बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

भगवान को भक्त वत्सल कहा जाता है। दुष्टों के लिए वे जितने कठोर हो जाते हैं भक्तों के सामने वे उतने ही कोमल हो जाते हैं। केवट की अटपटी एवं प्यार भरी भाषा से प्रभु प्रसन्न हुये।

सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुणा ऐन, चितई जानकी लषन तन॥

केवट की भाषा अटपटी थी। उसकी भाषा में असीम प्रेम भरा हुआ था। ऐसा प्रेम व्यक्ति को मोक्ष दिलाने वाला होता है। दीनबन्धु श्रीराम केवट को चरण धोने की अनुमति देते हैं। केवट सामान्य व्यक्ति से महान भक्त हो गया। उसका वर्णन तुलसी ने ऐसा किया है–

जासुनाम सुमिरत एक बारा।
उतरहि नर भव सिन्धु अपारा॥

(शेष पृष्ठ 18 पर)

"विश्व का महान वैज्ञानिक" सर् "जगदीशचंद्र बोस"

–डॉ० शंकर राव कप्पीकेरी, गुलबर्गा

विश्व के महान वैज्ञानिकों में भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस का मान अग्रगण्य है। आपने संसार को यह प्रमाणित कर दिया कि वनस्पति भी प्राणवान् होती हैं। आपने वनस्पतियों को भी सजीव प्रमाणित करके विश्व के महान वैज्ञानिकों में अपना विशिष्ट स्थान बनाया और भारत का नाम ऊँचा किया।

भारत का विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जगदीशचंद्र बोस का जन्म ढाका (बंगाल) जिले के राढ़ीखाल नामक ग्राम में सन् 1858 ई. में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भगवानचन्द्र बोस था। वे डिप्टी कलक्टर थे। भगवानचंद्र बोस अत्यन्त ही परिश्रमी व्यक्ति थे। उद्योग-धंधे में काफी धन गँवा चुके थे लेकिन उनमें स्फूर्ति व उन्नति करने की भावना का अभाव नहीं था।

संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोसजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। आप बचपन से ही पेड़ पौधों के विषय में सोच विचार करते थे। एकान्त में उनके विकास आदि के बारे में मनन-चिन्तन किया करते थे। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। कलकत्ता के सेन्ट जान्स कालेज में पढ़ना शुरू किया। सन् 1878 ई. में आपने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सेन्ट जान्स कालेज के लोफॉट नामक पादरी ने जगदीशचन्द्र बोस को विद्याध्ययन करने के लिये बहुत प्रेरणा दी जिसके परिणाम स्वरूप आपकी रुचि भौतिक विज्ञान में बहुत गहरी होती गई।

कुशाग्र बुद्धि वाले जगदीशचन्द्र बोस आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए इंग्लैण्ड जाने के इच्छुक थे। आप के माँ-बाप ने बेटे की इच्छापूर्ति के लिए घर के सारे जेवर बेचकर जगदीशचंद्र बोस को इंग्लैण्ड भेजा। आपने लन्दन के मेडिकल कालेज में प्रवेश लिया। लेकिन वहाँ आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया। कुछ दिनों बाद आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वहाँ से आप ने वनस्पति शास्त्र में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। परीक्षा में आपको उच्च स्थान प्राप्त हुआ। आपको छात्र-वृत्ति मिली। आपने लन्दन विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में बी.एस.सी. की परीक्षा पास की। सन् 1885 ई. में जगदीशचन्द्र बोस भारत वापस लौटे।

बुद्धिशाली जगदीशचन्द्रजी अत्यन्त स्वाभिमानी ज्ञान पिपासु युवक थे। इंग्लैण्ड से स्वदेश लौटते ही आप को कलकत्ता विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध प्रेसिडेन्सी कालेज में विज्ञान के प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया गया। आपकी नियुक्ति अस्थायी थी। इसीलिए आपको सिर्फ आधा वेतन ही दिया जाता था। बोस ने आधा वेतन लेना अस्वीकार किया। आप बिना वेतन के ही तीन वर्षों तक कॉलेज में अध्यापक का कार्य करते रहे। उन दिनों आप को कठिन आर्थिक स्थिति से गुज़रना पड़ा। लेकिन आपने अपनी हिम्मत नहीं हारी और स्वाभिमान का त्याग नहीं किया। हिम्मत व धैर्य से ही कठोर आर्थिक संकट का सामना करते रहे। तीन वर्षों के पश्चात् ही कॉलेज अधिकारियों ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। आप का वेतन पूरा ही नहीं किया बल्कि अंग्रेज अध्यापकों के समान कर दिया गया। पिछले तीन वर्षों का पूरा वेतन भी दिया गया। हिम्मत से संघर्ष करते हुए जगदीशचन्द्र बोस ने प्रथम बार प्रेसीडेन्सी कालेज में अंग्रेज और भारतीय अध्यापकों की समानता स्थापित की।

विश्व के प्रख्यात विज्ञानी जगदीशचन्द्र बोस ने अपने घर में ही एक प्रयोग शाला खोल रखी थी। रात दिन वहीं प्रयोग करते थे। आपने अपनी प्रयोगशाला में विद्युत की चुम्बकीय तरंगों के विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। आपने अपने कार्य का विवरण इंग्लैंड की रॉयल सोसाइटी को भेजा। उस सोसाइटी ने आपके कार्यों को बहुत ही महत्वपूर्ण समझकर अभिनन्दन किया। लन्दन विश्वविद्यालय ने आपके शोध कार्य से सन्तुष्ट होकर ही आपको "डाक्टर ऑफ साइन्स" की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। सारा संसार आपके शोध कार्यों से प्रभावित हुआ।

भौतिक विज्ञान जिज्ञासु जगदीशचन्द्र बोस ने बेतार के तार भेजने की दिशा में भी अनुसंधान करना प्रारंभ

किया। आप समाचार विद्युत् तरंगों के आधार पर भेजने की दिशा में शोध कर रहे थे। आपको इस क्षेत्र में सफलता भी मिली। यूरोप के लोग पराधीन देश के वैज्ञानिक को इसके अविष्कार का श्रेय देना नहीं चाहते थे। उसी समय अमेरिका के निकोला तेसला, इंग्लैण्ड के सर ऑलिबर लॉज और इटली के मारकोनी नामक वैज्ञानिक भी बेतार के तार पर शोध कार्य कर रहे थे। यद्यपि बोसजी ने बेतार के तार का आविष्कार इटली के मारकोनी के साथ ही साथ किया लेकिन यूरोप के लोगों ने यही प्रचार किया कि यह आविष्कार मारकोनी ने किया है। ऐसा पक्षपात हुआ।

अन्तः प्रेरणानुभवी जगदीशचन्द्र बोस ने वैज्ञानिक पर्यवेक्षण करके संसार को यह प्रमाणित कर दिया कि वनस्पति मनुष्यों और पशु-पक्षियों के समान ही जीव धारी हैं। उन्हें भी सुख-दुख का अनुभव होता है। जिस तरह जीव-जन्तुओं के शरीर में संवेदन शिराओं का जाल बिछा रहता है, उसी प्रकार वनस्पतियों में भी। यही नहीं, वे भी सूर्य के अनुकूल ताप से प्रसन्न होते हैं, सुखद समीर का पान करके आनन्द-विभोर होते हैं। एक प्रक्रिया के द्वारा आपने यह दिखाया कि सूर्य किरणों का ताप पड़ने से पौधों की अदृश्य चेष्टाओं से घंटी बजने लगती थी। यही नहीं, आपने दिखाया कि पौधे उत्तेजित भी होते हैं। वे सोते-जागते हैं। क्लोरोफार्म के प्रयोग से पौधे बेहोश हो जाते हैं।

यह दुनिया की एक ऐसी महत्वपूर्ण खोज थी कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। दुर्भाग्यवश आपके इस कार्य की भी उपेक्षा करने का प्रयास किया गया। एक बेईमान अंग्रेज वैज्ञानिक ने दावा किया कि "वनस्पति में प्राण होने का आविष्कार मैंने किया है और मुझे इसका आविष्कर्ता घोषित किया जाए।" कुछ समय के लिए इसके वास्तविक आविष्कर्ता को जानने में कठिनाई हुई। लेकिन रॉयल सोसायटी ने जब जाँच की तो प्रकट हुआ कि वह अंग्रेज बोस जी से मिलकर इसकी पूरी जानकारी हासिल कर चुका था और उसी जानकारी के आधार पर वह मौलिकता का दावा कर रहा था। इस बीच कुछ लोगों ने जगदीशचन्द्र बोस का परिहास किया। व्यंग्य भी किया गया। लेकिन बोसजी को आत्म विश्वास था कि सत्य एक दिन प्रकट होकर ही रहेगा। आपको अपने आप पर पूरा विश्वास था। अन्त में सत्य की विजय हुई। विश्व ने आपको महान वैज्ञानिक कहा। एक स्वर से वैज्ञानिकों ने अपने युग का महान् वैज्ञानिक स्वीकारा।

विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा मान्यता प्राप्त होते ही बोसजी को लन्दन की रॉयल सोसायटी ने भाषण देने के लिए निमंत्रित किया। भारतीय प्रतिनिधि के रूप में पेरिस में संपन्न हुये विज्ञानपरिषद् में भाग लिया। पंजाब विश्वविद्यालय में भाषण देने पर जो धनराशि मिली उसे आपने योग्य विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति देने के हेतु विश्वविद्यालय को लौटाई। सन् 1917 ई. में भारत सरकार ने आप को 'सर्' की उपाधि देकर सम्मानित किया। सन् 1920 ई. में अपनी सारी संचित धन राशि से अनुसंधान शाला खोली। फिर एक बार यूरोप के वैज्ञानिकों के सम्मुख आपने अपने सिद्धान्त को प्रमाणित व पुष्ट किया। राष्ट्रपिता ने भी प्रशंसा की। सन् 1943 ई. में 85 वर्ष की आयु में बोस जी का स्वर्गवास हुआ।

(–अयोध्याकांड का केवट प्रसंग पृष्ठ 16 का शेष)

सोऊ कृपाल केवट ही निहोरा।
जेहि जग किया तिहुँ पगहु ते थोरा॥

जिसने अपने तीन पग में जगत को ही नाप लिया ऐसे स्वामी केवट के प्रेम से प्रभावित होकर उसे पुनीत बना दिये। श्रद्धा एवं भक्ति से केवट श्रीराम के चरणकमलों को धोने लगा उस जल को तीर्थ के रूप में स्वीकार करके अपने परिवार को एवं पूर्वजों को भी भवसागर से पार उतारा।

केवट चतुर था। जब श्रीराम उसको उतराई देना चाहते हैं तो वह कहता है–

नाथ आज मैं कहा न पावा।
मिटे दोष दुःख दारिद्र दावा॥
अब कछु चाहिये नाथ न मोरे।
दीन दयालु अनुग्रह तोरे॥

इसे कहते हैं भगवत् प्रेम पवित्र स्नेह। इसी पवित्र प्रेम के कारण केवट आज भी हमें याद रहेगा।

केवट की श्रध्दा, भक्ति एवं प्रेम अयोध्याकांड के प्रसंग में सुंदर ढंग से चित्रित हुआ है। केवट निम्न कोटि का व्यक्ति होते हुये भी उच्च कोटि का पाठ पढ़ाता है। इतनी श्रद्धा एवं भक्ति भगवान के प्रति हमारे हृदय में होगी तो चाहे मानव दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हो वह सदा परमात्मा के सीने में स्थान प्राप्त करता है।

भरोसा जगाती कवितायें

—उर्मिल सत्यभूषण, दिल्ली

कविता लिखना संवेदनशील व्यक्ति की अनिवार्यता है। हमारे आसपास बहुत कुछ घटता रहता है और सामान्य आदमी अपनी रोजमर्रा की जद्दोजहद् में उलझा हुआ उस आसपास के वातावरण को अनदेखा करता रहता है किंतु कवि हृदय संवेदनशील व्यक्ति के लिये वह आसपास का 'घटित कुछ' कभी आँख में किरकिरी सा किरकिराता है, कभी पाँवों में किरच बन कर चुभता है कभी फांस बन उंगली के पोरों में टीसता है तो कभी दिमाग की नसों को झिंझोड़ता है और कभी बोझ से हृदय को जकड़ लेता है। ये छटपटाहटें और तिलमिलाहटें कविता में अभिव्यक्ति पाकर छुटकारे की सांस लेती हैं।

ऐसे एहसासों के जमघट से गुजरते हुए जब पाठक भी कवि के एहसासों के साथ बहने लगे तो समझना चाहिये कविता सार्थक है।

डॉ0 ज्ञानचंद गुप्त के नवीन काव्य संग्रह 'किसी दिन के लिये' को पढ़ते समय मुझे ऐसा ही भान हुआ और मैं तीन चार बार उस बहाव में इधर से उधर और उधर से इधर बहती रही, उनके सारे अहसासों को जीती रही। उनका आक्रोश, उनकी घुटन, उनकी असहायता उनके सपनों की टूटन आस्थाएँ और विश्वास अनिर्णय से उपजती उनकी खीझ, उनकी आशाओं की भीतों में पड़ती दीवारें सब मुझे उनकी कविताओं के आइनों में नज़र आती रहीं और मुझसे संवाद स्थापित करती रहीं। ज़ाहिर है ये कविताएँ ज़िंदगी और जगत से जुड़ी हैं किसी विशेष साँचे में न ढल कर सामान्य और सहज रूप में एक आम संवेदनशील व्यक्ति के निजी अनुभवों से साक्षात्कार कराती अपनी सी हो उठती है। मानव और समाज से सरोकार है उनका। देश और विश्व से वास्ता रखती हैं वे। परिवार और प्यार से संबंध है उनका। उनके निजी अनुभवों से उपजी ये रचनाएँ सार्वजनीन होने को आतुर हैं। उपयुक्त भाषा और सरल सहज कथन के कारण अपनी बात कहने में पूरी तरह माहिर है ये रचनाएँ संप्रेषणीयता सबसे बड़ा गुण है इनका। उसी बहुआयाम जीवन की झलक ज्ञानचंद जी की कविताओं में मिलती हैं। हमारी सोच में चुभने वाले तीखे तीखे पिन हैं तो खुशबू से हृदय को आह्लादित करते कई प्रकार के फूल भी हैं। उनकी कविताओं में अनिर्णय की गुफायें हैं तो प्रबोध देता बोधिवृक्ष भी है।

'बिल क्लिंटन के आने पर कविता की इन पंक्तियों को देखें—

अनिर्णय की गुफा में
क्यों बैठे हो अब तक
अफसोस कि बोधिवृक्ष तुम्हारे मुहाने पर खड़ा
ऊँघता है अब भी प्रतीक्षा में

एक ओर चिढ़ाते सपने हैं तो स्थिति और गति से पहचान कराती आकाश में उड़ती मस्त चिड़िया भी हैं। कहीं सिद्धांतों के ऊहापोह हैं तो कहीं प्रतियोगितावादी उपभोग की संस्कृति की रोमानियत भी शब्दों से झाँक झाँक जाती है।

इन कविताओं में सरसों की चादर ओढ़े खुशबू फैलाते गाँवों के खेत हैं तो शहरों में मजदूरों के लिये यातना शिविर भी/गाँव हैं, जहाँ—

स्मृतियाँ जब कभी उपज आती हैं
मैं हल उठता हूँ भीतर ही भीतर
कैसे थे वे लोग, जो पढ़े बिना किसी पाठशाला में
जीवन का पाठ सीख गये थे।

श्रम की नदी में डुबकियाँ लगा लगाकर अभाव और दुर्गन्धमय जीवन जीते हुए। उन्होंने बालबच्चों की ज़िंदगी में अनजाने ही कर्म का पौधा रोप दिया था जो कालांतर में फलफूल बन कर। जीवन में खुशबू बिखेर रहा है।

उनकी बस्तियों में अँधेरे भले ही बजबजाते थे।
लेकिन उसूलों के पक्के थे लोग/
+++++/गाँव के परिदृश्य भी कैसे जीवंत थे/ जो
चुनौती से चेतना उपजाते थे और तलाशते थे
खुशबू का ठिकाना

और शहर में—

मैं दंग रह गया देखकर मजदूरों की इस बड़ी
बस्ती को

(शेष पृष्ठ 22 पर)

एकांकियों के जनक डॉ0 रामकुमार वर्मा

–डॉ0 सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

मयूर पंखी व्यक्तित्व वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ0 रामकुमार वर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक और चुम्बकीय था। वे भारतीय मनीषा के संस्कृति पुरुष थे। हिन्दी साहित्य में उन्होंने जो उल्लेखनीय कार्य किया है और कृतियाँ दी हैं उनके लिए हिन्दी साहित्य जगत् उनका ऋृणी रहेगा और याद करेगा।

इनका जन्म शिक्षित परिवार में 15 सितम्बर 1905 को मध्यप्रदेश में सागर के गोपालगंज में हुआ था। इनके पिता डिप्टी कलेक्टर तथा माता हिन्दी की विदुषी महिला थीं जो अपने समय की परिचित कवयित्रि भी थीं। डॉ0 वर्मा के अन्दर अपने पूर्वजों की भाँति राष्ट्रप्रेम जन्मजात था। जब वे दसवीं कक्षा में पढ़ रहे थे उस समय गान्धीजी का असहयोग आन्दोलन चल रहा था। उसी आन्दोलन के प्रचार में 27 फरवरी 1921 को जब मौलाना शौकत अली नरसिंहपुर में विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे तो उन्होंने गान्धीजी के असहयोग आन्दोलन का संदेश सुनाया और कहा कि गान्धीजी चाहते हैं कि विद्यार्थी स्कूल जाना छोड़ दें और आज़ादी की लड़ाई में भाग लें। इस बात को सुनकर विद्यार्थियों में कोई हलचल नहीं हुई। उन्होंने पुनः विद्यार्थियों को ललकारा कि, 'है कोई माई का लाल जो' कल से स्कूल जाना छोड़ दे। यह सुनते ही रामकुमार खड़े हो गये और उन्होंने सबके सामने संकल्प किया कि, "मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा।" वे उसी दिन से लड़कों को साथ लेकर प्रभात फेरी करने लगे, सिर पर खादी का गट्ठर रखकर खादी बेचने लगे और गान्धीजी के विचारों का प्रचार करने लगे। जब आन्दोलन समाप्त हो गया तो उन्होंने पुनः स्कूल जाना शुरु किया।

डॉ0 वर्मा ने हाई स्कूल, इंटरमीडियेट, बी.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा एम.ए. की परीक्षा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम रहे तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वे सुविख्यात साहित्यकार होने के कारण कभी भी धरती को भूलकर गगन में विचरण करने वाले कृत्रिम भूमिका पर नहीं उतरे। वे सामाजिक परिवेश से सदैव जुड़े रहे। सम्भ्रांत परिवार में जन्म लेने के बाद भी उन्होंने कभी किसी को उपेक्षा भाव से नहीं देखा। वे दयाभाव वाले सहृदय व्यक्ति थे तथा वसुधैवः कुटुम्बकम रखने वाले अत्यन्त सरल व्यक्ति थे। इनमें न कोई जातिवाद था न क्षेत्रवाद और न प्रांतवाद यदि था तो केवल भारतवाद। वे भारत के गौरव को धूमिल करने वाले लोगों को सदैव तर्क पूर्ण उत्तर देकर निरुत्तर कर देते थे।

डॉ0 वर्मा ने प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 8 अगस्त 1931 को प्राध्यापक का पद भार सम्भाला और वे 1965 तक निरन्तर सेवा करते हुये आचार्य अध्यक्ष के पद से सेवा निवृत्त हुये। डॉ0 रामकुमार वर्मा ने सोवियत संघ, नेपाल तथा श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यक्ष के पद पर कार्य किया और अनेकों देशों की यात्राएँ कीं लेकिन भारतीयता सदैव उनके साथ रही। इनकी रचनाओं से प्रभावित होकर अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों ने इन्हें पुरस्कृत तथा सम्मानित किया और समय-समय पर अनेकों अलंकरणों से सुशोभित किया। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सुशोभित किया था।

इनका सम्पूर्ण आदर्शवादी जीवन ही इनके नाटकों तथा अन्य रचनाओं में परिलक्षित होता है।

उन्होंने ऐतिहासिक, समाजिक विशेषकर आधुनिक समाज में व्याप्त समसामयिक समस्याओं को सामने रखकर नाटकों की रचना की है। वे हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास के प्रणेता थे। उनका समीक्षा ग्रन्थों और संस्मरणों के सृजन में उल्लेखनीय योगदान है। इन सबके अलावा उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, जीवन परक हास्य, चित्र-विचित्र रेडियो तथा समस्या प्रधान एकांकियों की रचना की जो कुल मिलाकर लगभग 122 हैं। इन्हें सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य जगत एकांकियों के जनक के नाम से जानता है।

डॉ0 वर्मा राष्ट्रीय जागरण एवं पुनरुत्थान के प्रगति लेखक हैं। इन्होंने भारतीय इतिहास, समाज एवं संस्कृति को नाट्य साहित्य में मुखर करने वाले प्रवाहक कलाकारों

में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। इनके नाटक तथा एकांकी मात्र इतिहास चित्रण के लिए नहीं हैं। उनमें सांस्कृतिक चेतना प्रबल होकर सामने आयी है। उनके विचार में उस महत्त संस्कृति को गौरव प्रदान करने वाले उस संस्कृति की रक्षा हेतु मर मिटने वाले हमारे ऐतिहासिक वीर सम्राटों की यशोगाथाएँ पढ़ने से आज के नवयुवकों को आत्मबल प्राप्त होगा। और वे प्राचीन गौरवमयी संस्कृति के प्रति आस्थावान बनेंगे। उन्होंने आपने नाटकों के अन्त में क्रूरता एवं हिंसा पर दया एवं अहिंसा की विजय दिखायी है। वे सदैव न्याय के पक्षधर थे। उन्होंने समुद्रगुप्त पराक्रमांक नाटक में सम्राट् समुद्रगुप्त पराक्रमांक की दूरदर्शिता एवं न्यायप्रियता की झलक प्रस्तुत की है। वे आदर्शवादी और आशावादी थे। उन्होंने कहा है कि जब मर्यादा का विशाल प्रसाद धराशायी हो जाता है तो उसके स्तम्भ भी स्थिर नहीं रह जाते। उन्होंने नाना फड्नवीस नाटक में आशावादी पक्ष का उल्लेख किया है, उन्होंने नाना फड्नवीस से कहलवाया है कि "हम विपत्तियों के पक्षियों को सिर पर उड़ने से नहीं रोक सकते, किन्तु उन्हें हृदय में घोंसले बनाने से रोक सकते हैं। इसी तरह आशावादिता का एक और उदाहरण इसी नाटक में है," लोग कहते हैं कि गुलाब चाहे जहाँ उगे, अपने साथ कांटे भी उत्पन्न करता है। मैं कहता हूँ, ठीक है, किन्तु जहाँ काँटा है वहाँ कुछ समय बाद गुलाब भी होता है।' डॉ0 वर्मा का मानवतावाद अमानवीय प्रवृत्तियों के प्रति विद्रोह एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना के रूप में प्रत्येक नाट्य कृति में दिखाई देता है।

मानवतावाद में जाति-भेद एवं धर्म भेद के लिए कोई स्थान ही नहीं है। जौहर की ज्योति नाटक में उनकी विचारधारा स्पष्ट है " सत्य और सौन्दर्य की कोई जाति नहीं होती। प्रेम और अनुराग किसी के वंश की संपत्ति नहीं है। दुर्गा सप्तशती में लिखा है कि सभी देवताओं ने अपनी शक्ति के संगम से दुर्गा का निर्माण किया और उसने असुरों पर विजय प्राप्त की। नारी उसी दुर्गा का रूप है। देवी अहिल्याबाई नाटक में कहती हैं, "स्त्रियाँ तलवारों से भी अधिक तेज हैं। अग्नि शिखा नाटक में बालगुप्त के मुँह से कहलवाया गया है, "नारी शरीर से भले ही दुर्बल हो, किन्तु मन से वह ब्रह्मांड से भी अधिक शक्तिशाली है। नारी शक्ति के संबंध में इस तरह अनेकों विचार प्रकट किए गए हैं।

आज देश में धर्म के नाम पर, हिन्दू-मुसलमान की साम्प्रदायिकता का खेल खेल कर राजनीति में निहित स्वार्थी लोग अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं तथा कुर्सी पर विराजमान हैं। डॉ0 वर्मा ने हिन्दू-मुसलमान के इन साम्प्रदायिक दंगों को स्वयं देखा और विचार किया कि इसका केवल कारण है कि हमने धर्मों का आदर करना नहीं सीखा है और हमारी कथनी तथा करनी में भारी फर्क है। शिवाजी एकांकी में शिवाजी के माध्यम से उन्होंने इसका समाधान प्रस्तुत किया है। "कुरान की उतनी ही इज्ज़त होनी चाहिए जितनी भवानी की पूजा की या समर्थ गुरु रामदास की वाणी की। मस्जिद का दरवाज़ा उतना ही पवित्र है जितना तुम्हारा मन्दिर का कलश। शिवा के लिए इस्लाम धर्म उतना ही पूज्य है जितना कि हिन्दू धर्म। मेरे लिए धर्म के ख्याल से हिन्दू और मुसलमान में कोई फर्क नहीं हैं। इसी तरह ध्रुवतारिका एकांकी में डॉ0 वर्मा ने हिन्दू-मुसलमान जो अलग धर्म हैं वो इन्सानियत के, नाते मिलाने का सफल प्रयास किया है, इसमें सफीयत, आयशा से कहती है, "आयशा तुलसी की पूजा करने में मुझे बहुत आनन्द आता है और फिर कहती हैं, "मुसलमान होने से क्या हुआ दिल तो नहीं बदला जा सकता। शाहंशाह अकबर ने पहचाना था कि इंसान धर्म से ऊँचा है। हिन्दू और मुसलमान इन्सानियत के लिबास हैं इन्सानियत के टुकड़े नहीं। इस तरह डॉ0 वर्मा ने साम्प्रदायिक सौहार्द की बात अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से बड़ी प्रबलता से रखी है ताकि समाज में इन समस्याओं का समाधान खोजा जा सके।

डॉ0 रामकुमार वर्मा छायावादी कवि के रूप में भी साहित्य जगत में मुखरित हुए हैं। जीवन और साहित्य के प्रति उनकी दृष्टि में भावुकता, कल्पना, स्वानुभूति, प्रणय, सौन्दर्य, आदर्श, विश्व मानवता का प्राधान्य है और अभिव्यक्ति में छायावादी अलंकारिकता, लाक्षणीकता ध्वनिमाधुर्य से गुंजरित कोमल कान्त पदावली है। इनकी छायावादी कविताओं में वीर-हम्मीर, कुलकर्णा, चितौड़ की चिता, अभिशाप, अंजली, रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, संकेत, आकाशगंगा, एकलव्य आदि प्रमुख

हैं। इनकी छायावादी कविताओं में सर्वात्मवादी प्रवृत्ति के कारण मानवीयकरण प्रेरित कल्पना की प्राचुरता है जैसेः–

"इस सोते संसार बीच
जगकर सजकर रजनी वाले।
कहाँ बेचने ले जाती हो,
ये गजरे तारों वाले।
मोल करेगा कौन,
सो रही हैं, उत्सुक आँखे सारी।
मत कुम्हलने दो
सूनेपन में अपनी निधियाँ न्यारी।"

इनकी कविताओं में आध्यात्मिकता दिखायी देती हैः-

"और सर्प-दंशित सम जग
जब हो जाता है तमसाकार।
मैं जाता हूँ पुरुष रूप से
करने महा प्रकृति से प्यार।"

इसी तरह डॉ0 वर्मा ने "एकलव्य" में अपनी अद्वैतवादी दृष्टि के अनुसार जहाँ जड़ चेतन की एकता अथवा नाद की एकता का विभाजन प्रस्तुत किया है वहीं इस काव्य में दार्शनिक गरिमा आ गयी है जैसेः-

"संचरणशील है सदैव कण-कण में,
जड़ नहीं जड़ वह चेतनावरण है
और
"टूट गये बंध, जड़ और चेतन सभी
एक नाद में हो लीन, स्पन्दित से उठे
यदि जड़ उस दिव्य राग का स्थायी है
तो समस्त चेतना है अन्तरा अलाप-सा।"

इतनी लम्बी साहित्यिक यात्रा पूरी करने के बाद 5 अक्टूबर 1991 की शाम को ऐसे मनीषी पुरुष ने इलाहाबाद में अन्तिम सांस ली। ○

(भरोसा जगाती कवितायें - उर्मिल सत्यभूषण पृष्ठ 19 का शेष)

जहाँ कोठरियाँ ही कोठरियों का भारी अम्बार था
बी लाईन में
जिनमें एक नहीं, कई कई मजदूर अकेले और
कई अपने-अपने कुनबों को लेकर
कीड़े मकोड़ों की तरह रहते थे। इन यातना
शिविरोंमें/ कोठरियों के सामने छोटी
छोटी नालियाँ थीं जिनमें बच्चों के मलमूत्र बहते थे
दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध उगलते थे

इन कविताओं में ऊल जलूल प्रश्नों के बीहड़ जंगल हैं तो चिंताओं के ढूह भी, जो बौरायी सत्ता से, तो कभी खोये विपक्ष से भ्रमित न्यायकर्ता और व्यवस्था से बारबार रू-ब-रू होते हैं। इनके अतिरिक्त इन कविताओं में जवान बेटा है, तो बूढ़े माँ बाप भी, और चिंताओं से दूर खुशियाँ देता छोटा बच्चा चिन्टू है। जीवन के घनेरे डरावने जंगल है तो उसमें भरोसा पैदा करने वाली औरत भी है, जो आशा की किरण है। बहरहाल इनकी हर कविता चाहे सपाटबयानी में ही बात क्यों न कर रही हो....पठनीय है और कुछ न कुछ कहती है। इन कविताओं में अंकित व्यक्तिचित्र जो कवि के प्रेरणा स्रोत है, एक अन्य उपलब्धि है। प्रो. उदयभानु सिंह, डॉ0 नित्यानंद तिवारी, प्रकाश मनु एवं श्यामसिंह शशि के ऊँचे गहरे किंतु विनम्र व्यक्तित्व से साक्षात्कार कराती ये कविताएँ बेहद प्रभावी हैं। इनमें पारदर्शिता है जो लोग इन्हें जानते हैं, वे इन्हें भलीभाँति पहचान सकते हैं। संवेदना और कलात्मक क्षमता दोनों इन कविताओं में दृष्टिगत होती है। ज़रा जायजा लीजिए :

1. प्रो. सिंह काल की छाती पर लिखे संघर्ष के
   शिलालेख हैं उन्होंने जम कर संघर्ष किया है।
2. मार्क्सवादी है नित्यानंद जी
   लेकिन वे परिमल के इलाके से होकर आये है
   मार्क्सवाद तक

अन्य कई छोटी कवितायें संबंध, ठहाके, औरत, घर तथा रिटायरमेंट के बाद आदि गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। हमारी सोच को धीरे धीरे छोड़ती और संवेदनाओं को छूती ये कविताएँ सचमुच आत्मीयता और उसके संघर्ष में भरोसा जगाती हैं। अपनी भावनाएँ और चिंताएँ पुस्तक के माध्यम से हमारे साथ बाँटने के लिए ज्ञानचंद जी को बधाई और धन्यवाद। ●

नारी सक्षमीकरण

–प्रा. डॉ0 ललिता राठोड, बीड

सन् 2001 नारी सक्षमीकरण वर्ष मनाया गया। 'सक्षम' इस शब्द के इर्द-गिर्द मेरी विचारप्रणाली घूमती है। 'सक्षम' शब्द कठिन लगता है, इस शंब्द का अर्थ विस्तृत एवं विविध हो सकता है। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक क्षमता को पहचान कर उस मार्ग पर क्रमन करना ही शायद सक्षमीकरण की प्रक्रिया हो सकती है। जरूरत है सिर्फ उस क्षमता को जागृत करने की। एक बार जागृति के 'पर' निकल आयेंगे तो नारी को आकाश छूने में देर नहीं होगी।

सामान्य रूप से करुणा, द्रया, क्षमा, कोमलता, सहनशीलता आदि गुण नारी के माने जाते हैं। धैर्य, साहस, पराक्रम, आक्रमण आदि गुण पुरुषों के माने जाते हैं। जब कभी पुरुषों में स्त्री गुण प्रगट हुए तब उसे लोगों ने सन्त कहा। जैसे भगवान बुद्ध, ईसामसीह, भगवान महावीर। जो भी महिलाएँ-दुनिया के सामने आयीं उनमें पुरुषों के गुण उतर आये थे। जैसे झाँसी की रानी, इंदिरा गांधी आदि।

"अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी।"

नारी मन का और चरित्र का समर्थ बिम्ब मैथिलीशरणगुप्त की इन पंक्तियों में उजागर हुआ है। हृदय में अपार दया का सागर है, परन्तु सारा जीवन करुणामय है। जिसकी पहचान ही क्षमा है। हाँलाकि एक प्रकार की घुटन आम नारी को सहनी पड़ती है। एक बाप की बेटी, किसी की पत्नी, किसी की बहन, किसी की माँ, नारी के रूप हैं। एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की अधिकारी होने का उसे अवसर ही नहीं मिला। जो उसे पद दिये जाते हैं वह पुरुष सापेक्ष हैं –

स्त्री – जीवन है पंछी जैसा
तीन बार कट गये पर,
पिता पति - बेटे के लिए
समर्पित हैं तीन अंक।

इस सीमित दायरे से निकलकर क्षेत्र विशेष की ऊँचाई को छूने का प्रयास नारी ने किया है। कईयों ने बुलंदी हासिल की, फिर भी नारी की प्रतिमा एक गृहिणी के रूप में दिखाई देती है। कथा-काव्यों में उसे इसी रूप में चित्रित किया गया है। मानों यही उसके जीवन की सार्थकता है। इस पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में पुरुषों के अहं शोषण के लिए जो जरूरी था। उसी रूप में उसे ढ़ालने की कोशिश मनीषियों ने की है। एक प्रसिद्ध डॉक्टर, कुशल प्रशासक, एक अच्छा वकील होने के बावजूद भी उसे कुशल गृहिणी होना, उसकी कीर्ति में चार चाँद लगा देता है।

आधुनिक विचार प्रणाली की महिलाएँ अपने-आप में सक्षम हैं, शायद इसलिए वह अपने को पुराना सड़ा हुआ मॉडेल नहीं समझती। कंगन की खनक में रमनेवाली नारी आज शासन संभालती हुयी दिखायी देती है। पायल की झंकार सुनाने वाले पैर अब प्रगति रूपी घोड़े पर उछलने लगे हैं। रूप श्रृंगार को धन्य माननेवाली नारी युद्ध क्षेत्र में घावों को अपने आभूषण समझ रही है। भारत के इतिहास में ही नहीं विश्व इतिहास में भी महिलाओं ने शासन कार्य में अपना योगदान देकर वह कितनी सक्षम है, यह साबित कर दिया है।

मेरे मन में अक्सर अलग-अलग सवाल उठतें हैं, जैसे क्या नारी आज पूरी तरह सक्षम हुई है ? अगर हुई है तो किस दृष्टि से ? क्योंकि अर्थोपार्जन करनेवाली नारी को क्या सक्षम समझा जाए ? अगर ऐसा मानते हैं तो कई नारियों को यह मालूम नहीं होता कि बैंक में उसके नाम पर कितने रुपये जमा हैं ? कितने निकाले गये हैं ? क्या वह केवल चेक पर हस्ताक्षर करने की ही आधिकारिणी है ? मैंने कई ऐसी नारियाँ देखी हैं जो बीस हजार रुपये वेतन पाती हैं। मगर उनके पर्स में बीस रुपये भी नहीं होते। रुपये उसे पति से माँगकर ही लेने पड़ते हैं। उन बीस रुपयों का हिसाब भी देना होता है। उसे अगर कहीं जाना हो तो पति महाशय से अनुमति लेनी पड़ती है। बाहर जाने का कारण बताना पड़ता है। इतना ही नहीं जल्दी वापस आने का वक्त भी बताना पड़ता है। क्या कोई पुरुष इन सभी बन्धनों का कभी पालन करता है ? मेरे विचार से ऐसा कोई भी नहीं होगा, इसलिए यह लगता है कि अर्थार्जन करने वाली स्त्री सक्षम नहीं है।

पुरानी सामाजिक और मानसिक प्रणालियों में अब बदलाव आने लगा है। वैचारिक मूल्यों में बदलाव आ रहा है। साथ ही सामाजिक मूल्य भी बदल रहे हैं। आज हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी क्षमता सिद्ध की है। अपनी योग्यता के बल पर विविध पद हासिल किये हैं। आज की नारी पुरुष सापेक्ष नहीं है। जहाँ पुरुषी अहंकार और दम्भ ने स्वाभिमानी नारी पर दबाव लाने की कोशिश की वहाँ महिलाओं ने पुरुषी अहंकार को चकनाचूर कर अपना व्यक्तित्व और कृतित्व सिद्ध किया है। ऐसी महिलाओं की इस दुनिया में कमी नहीं है। विश्व इतिहास में पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीलंका की सिरीमाओ बंडार नायकी बनी। वह समय सन् 1960 का था। अपने कार्यकाल में सक्षम तरीके से और धैर्य से अनेक काम उन्होंने किये। जैसे सिंहली भाषा को राजभाषा का दर्जा देना, कंपनियों तथा तेल मिलों का राष्ट्रीयकरण करना। बीमा निगम का राष्ट्रीयकरण करना आदि। सासंद को सार्वभौम अधिकार देकर न्याय संस्था का पुनरावलोकन का अधिकार उन्होंने ही रद्द किया। 'द विहार ऑफ अनूराधपुर' जैसी पुस्तकें भी उन्होंने लिखीं।

ब्रिटेन में एक साथ दो महिलाओं ने शासन की बागडोर संभाली थी। रानी एलिझाबेथ और दूसरी थी प्रधानमंत्री मार्गरेट थेचर। कभी पुरानमतवादी और कभी पुरोगामी बनकर राजसत्ता तथा लोक मानस का मेल बनाए रखने में थॅचर मेडम का बहुमूल्य योगदान है। भारत का इतिहास भी नारी के शासन कुशलता का साक्षी है। वैशाली की नर्तकी आम्रपाली मगध नरेश से प्रेम, सिपाही समझकर करती थी मगर-हकीकत का पता लगते है आम्रपाली ने प्रेम को ठुकराया और देश भक्ति की मिसाल कायम की। रानी कर्मवती ने हुमाँयू को राखी भेजकर भाई - बहन के रिश्ते का वास्ता देकर मेवाड़ की रक्षा की। चितौड़ के राजा रत्नसेन की पत्नी ने अल्लाउद्दीन और कुंभलनेर के राजा देवपाल से अपने शील की रक्षा करते हुए जौहर कर गयी। दिल्ली की तख्त पर बैठनेवाली पहली महिला का नाम रजिया सुलतान था। प्रजा का हाल जानने के लिए वह भेस बदलकर खुद शहर में घूमती थी। बगावत के कारण उसे ताजपोशी छोड़नी पड़ी। 16 वीं शताब्दी में हुई चाँद बीबी का विवाह पहले आदिलशाह के साथ हुआ था। पति के देहान्त के बाद भतीजे अब्राहिम को ताजपोशी करार देकर वह स्वयं राज्य की देखभाल करती थी। उसकी शूरता, वीरता तथा धीरता का इतिहास गवाह है। 17 वीं शती की सबसे बड़ी महिला जीजाबाई थी। मुस्लिम राजसत्ता को चुनौती देने के लिए उसने अपने बेटे शिवाजी को तैयार किया। शासन व्यवस्था में जीजाबाई का काम सूत्रधार का रहा। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई एक कुशल शासक के रूप में हमारे सामने आती है। पति गंगाधरराव निंबालकर के निधन के बाद उसने सन् 1853 में एक लड़का गोद लिया किन्तु सन् 1854 में लॉर्ड डलहौसी ने दत्तक विधान नामंजूर कर दिया। रियासत ब्रिटिश सल्तनत का हिस्सा बना। तब रानी लक्ष्मीबाई ने नारा दिया "मेरी झाँसी नहीं दूंगी" सर ल्यूरोज रानी को पकड़ने झाँसी आया। ग्यारह दिन तक लड़ाई चली। आखिरकार इस 23 साल की यौवना ने जिन्दगी की लड़ाई लड़ते लड़ते बाबा गंगादास की कुटिया में अपना दम तोड़ दिया। देशाभिमान के लिए मरकर वह अमर बनी।

स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू का नाम अग्रणी है। उन्होंने और रामास्वामी अय्यर के साथ मिलकर स्वतंत्रता का प्रचार प्रसार किया। हैदराबाद में प्लेग फैला हुआ था। सरोजिनी नायडू ने वहाँ समाज सेवा की इसीलिए उन्हें "कैसर-ए-हिंद" की पदवी प्रदान की गई। बाद में यह पुरस्कार उन्होंने ब्रिटिश सरकार को वापस कर दिया था। वे अनेक आँदोलनों में महात्मा गांधी के साथ सक्रिय रही थीं। दांडी यात्रा में एक जत्थे का नेतृत्व किया था। सन् 1925 में हुये कानपुर में अखिल भारतीय अधिवेशन की वह अध्यक्षा बनीं। परतंत्र शासनसत्ता का विरोध स्वतंत्र भारत का आग्रह सरोजिनी की विशेषता बनी। विजयलक्ष्मी पंडित ने असहयोग आँदोलन से राजनीति में प्रवेश किया। इलाहाबाद नगरपालिका की वह सदस्य बनीं। संयुक्त प्रांत विधानसभा पर नियुक्त, स्थानिक स्वराज्य आयोग की पहली महिला मंत्री बनने का श्रेय इन्हीं को है। संयुक्त राष्ट्र प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में अपना कार्य किया था। मादाम कामा, अरुणा असफ़ली, कस्तुरबा गाँधी, रमाबाई रानडे, डॉ0 लक्ष्मी स्वामीनाथन्, कमलाबाई चट्टोपाध्याय, ॲनी बेसेंट आदि सभी नारियों ने कर्तव्य की क्षमता पर अपना नाम इतिहास में अमर कर दिया।

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत, नभ पद तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
अवनी और अंबर तल में।"

आमतौर पर महिलाएँ अपने पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन को अधिक महत्व देती हैं। बदलते सामाजिक परिवेश में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव अवश्य आया है। उसने अपने सामाजिक मानक तथा जिम्मेदारियों को तय किया है। बुद्धिमत्ता का उपयोग करके शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में उसका अच्छा योगदान है। सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए राजनीति में भी वह अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह समझकर निर्वाह कर रही है। जैसे वैधानिक कार्य के लिए गिरिजाव्यास, जोशपूर्ण भाषा के लिए प्रसिद्ध सुषमा स्वराज, एक साधारण स्कूल शिक्षिका से मुख्यमंत्री बनी मायावती, सोनिया गांधी, विजयाराजे सिन्धिया, जयललिता, राबडी देवी, ममता बॅनर्जी, फूलनदेवी आदि महिलाओं के उदाहरण हैं।

प्रशासकीय क्षेत्रों में भी महिलाओं का योगदान प्रथम श्रेणी का रहा। पहली आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी ने समस्या का मूल बीज खोजकर उसके निदान में लग जाना उनकी विशेषता है। इसलिए इंदिराजी ने उन्हें 'क्रेन बेदी' की उपाधि दी थी। तिहाड़ जेल को तिहाड़ आश्रम बनाने का स्तुति योग्य कार्य उन्होंने किया। इस काम के लिए उन्हें 'रेमन मॅगसे' से सन्मानित किया गया। अमरावती की जिला आयुक्त मनीषा म्हेसेकर 1992 में आई.ए.एस. बनीं। दस करोड़ की करवसूली राजनीतिक लोगों से संघर्ष करके वसूल की। जलगाँव में हुये सेक्स स्कॅन्डल का पूरा ब्योरा लेने की जिम्मेदारी सक्षम पुलिस अधिकारी मीरा भावठाणकर को सौंपी गयी थी। वह पूरी शक्ति से उन जिम्मेदारियों पर खरी उतरी। संपन्नता केवल आर्थिक नहीं होती। परिपक्वता, आत्मप्रतिष्ठा और अपने आप में सक्षम होना भी एक प्रकार की संपन्नता है। जो लोग स्वयं मन से तन से और बुद्धि से सक्षम नहीं होते वे जल्दी ही टूट जाते हैं। महिलायें इस बात को अच्छी तरह समझ गयी हैं। दीनहीन समझने के कारण वह पिछड़ी रहीं इसीलिए आज उसे आरक्षण की बैसाखी का सहारा लेकर खड़ा रहना पड़ रहा है। यदि महिलाएँ संगठित होकर किसी कार्य में लग जाएँ तो दूर नहीं है। महिला आरक्षण का डर पुरुषों को सताता है, इसलिए वह महिला आरक्षण का विरोध करते हैं। जो महिलाएँ जननी और कामिनी बनकर जीना चाहतीहैं वे अपनी उपलब्धियों को पहचानें, कोई भी कार्य तब उनके लिए जटिल नहीं रहेगा। ●

प्रचारक बंधु कृपया ध्यान दीजिए

1. फरवरी - 2005 की परीक्षा से भाषा प्रवीण पूर्वार्ध के द्वितीय पत्र में "कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ" पुस्तक से अध्याय– 1, 2, 3, 4, 5 ही केवल पठनीय है। पूर्वार्ध के तृतीय पत्र की पुस्तक " निबंध गरिमा" से क्रम– 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 23, 27, 28, 29, 37, 43, 48 – कुल 16 निबंध ही पठनीय है।

2. हिन्दी भाषा-प्रवीण (उत्तरार्ध द्वितीय प्रश्न पत्र) पुस्तक का नाम, काव्य प्रदीप में पठनीय विषय निम्न प्रकार हैं। (1) नौ रसों का साधारण ज्ञान (2) शब्दालंकारः अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, (3) अर्थालंकारः उपमा, प्रतीप, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, भ्रम, संदेह, दृष्टांत, उदाहरण उल्लेख, निदर्शन, अतिशयोक्ति, अर्थातरन्यास, अप्रस्तुत, प्रशंसा, समासोक्ति, व्याजस्तुति, विरोधाभास, (4) छन्दों के नाम :- चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लाल, कुन्डलिया, कवित्त, सवैया, छप्पय, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, मालिनी, मंदाक्रांता।

3. समीक्षा के सिद्धांत (डॉ0 सत्येन्द्र) पठनीय विषय निम्न प्रकार है।

1. साहित्य के रूप, 2.काव्य की परिभाषा और तत्व, 3.दृश्य काव्य 4.निबन्ध-सिद्धांत 5. कथा साहित्य, समीक्षा के तत्व।

बी.एस.शांताबाई
प्रधान सचिव

जय पाठशाला

—डॉ० अमरसिंह वधान-चेन्नई

लाल किले में प्राथमिक पाठशाला के नए अकादमिक सत्र का उद्घाटन करते हुए 'क' ने कहा, "प्यारे विद्यार्थियों, मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि अन्यत्र प्रवेश न मिलने के कारण आपने हमारी पाठशाला में दाखिला लिया है। हमारी नियति भी कुछ ऐसी ही है। कहीं जगह नहीं मिली। प्रमाणपत्र भी आधे-अधूरे थे। श्रेणियाँ भी नीचे दर्जे की थीं। बेरोजगारी ने खूब सड़कें नपवायीं। भला हो उनका जिन्होंने तरस खाकर यहाँ जगह दी। साक्षात्कार के दौरान एक ने कह ही दिया था कि इन नालायकों को रखोगे तो ये नालायक ही पैदा करेंगे।"

खैर छोड़िए ये पुरानी बातें। मैं तो इस लाल किले का ऐतिहासिक महत्व बताने जा रहा हूँ। आपने अपने माता - पिता से इस किले की कहानी सुनी तो होगी। मुगल आए, अंग्रेज आए और आकर चले गए। किले का बाहरी आकार बदला नहीं है। लेकिन अंदर से हमने इसे अपनी सुविधा के अनुसार कुछ बदला है। समय के साथ बदलना पड़ता है। फिर हम कोई सत्यवादी हरिश्चन्द्र तो हैं नहीं। धीरे - धीरे आप यहाँ के बारे में अच्छी तरह समझ जाएँगे। आपको कोई कष्ट नहीं होगा। यदि कष्ट दिया भी गया तो सहन शक्ति से अधिक नहीं होगा। इसके लिए आप सभी को तैयार रहना चाहिए। अब तालियाँ तो बजा दीजिए और तालियाँ बज गईं।

"अभी मेरे साथी ने इस लाल किले के नींव पत्थर से लेकर इसकी निर्माण कला के बारे में वे बातें बताईं, जो भूगोल एवं इतिहास की पुस्तकों में भी उपलब्ध नहीं हैं। ये आपके इतिहास और भूगोल के अध्यापक हैं। आदर्श अध्यापक का राष्ट्रपति एवार्ड ले चुके हैं," कहते हुए 'ख' रुक गई। माफ कीजिए, मुझे अपनी बात कहनी थी, इनके बारे में बोल गई। मैं आपकी भाषा अध्यापिक हूँ। यूँ तो सभी भाषाएँ बहने हैं। लेकिन इनमें आयु का फर्क है। मैं सबसे बड़ी आयु की भाषा सिखाती हूँ। यद्यपि इसी भाषा में हर साल मेरे कम अंक आते थे और मुझे अनुपूरक परीक्षा देकर ही पास होना पड़ता था।

इस बीच एक प्रश्न उछला। क्या हमें भी इस विषय में इसी प्रक्रिया से गुज़रना पड़ेगा ?

"नहीं, नहीं और कभी नहीं," 'ख' ने कहा। इसके लिए एक व्यवस्था है और उसका नाम है 'उपेक्षा कक्ष'। "यह अपेक्षा कक्ष क्या है ?", एक विद्यार्थी ने पूछ ही लिया। इस पर 'क' ने पूछा, "अच्छा, यह बताओ कि यदि तुम्हें अपनी माँ से कोई चीज जबरदस्ती लेनी हो तो तुम क्या करती हो ?" नाटक करना पड़ता है, कलाकारी के साथ। मैं उनसे गुस्सें में बात करती हूँ, टाल मटोल करती हूँ। सीधे मुँह बात नहीं करती। हमेशा चिड़चिड़ापन ओढ़े रहती हूँ। हारकर माँ ही पूछती है, अच्छा बताओ, तुम्हें क्या चाहिए ? फिर, मैं कोई सीधे थोड़े बताती हूँ। उम्र कम जरूर है, लेकिन कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। मुझे जो चाहिए अपने भाई को बता देती हूँ और मेरी अपेक्षा पूरी हो जाती है।

शाबाश ! तुम तो मेरी भी नानी निकली। यहीं तो हमारा 'अपेक्षा कक्ष' है। इस पर बड़े जोर से तालियाँ बजीं।

"मेरा नाम 'ग' है और इससे जो सुन्दर शब्द बनता है, वहीं मेरी शैक्षणिक योग्यता है, कहते हुए 'ग' ने बोलना शुरु किया। विकलांग विद्यार्थियों को परीक्षा भवन में एक सहायक की अनुमति मिल जाती है। यह बात तो आप सभी जानते हैं। यह सुनकर बच्चे अपने आपको देखने लगे।

इधर मेरी ओर देखो, हाँ, यह हुई न बात। मैं जानता हूँ कि आप में से कोई विकलांग नहीं है। लेकिन कई विकलांग हैं। "कैसे ?" एक ने पूछ ही लिया।

तो सुनिए, विद्यार्थी केवल शारीरिक तौर पर ही विकलांग नहीं होते, बुद्धि से भी विकलांग होते हैं। यहाँ मेरा तात्पर्य मंद बुद्धि से नहीं है। नालायक विद्यार्थी से है, जिसका संकेत मेरे पूर्व वक्ता 'क' आपको दे ही चुके हैं। ऐसे विकलांग विद्यार्थियों के लिए परीक्षा के दौरान हम उनके सहायक बनते हैं, पूरी मदद करते हैं। 'अपेक्षा कक्ष' हमेशा खुला रहता है, जिसके बारे में 'ख' विशेषज्ञ आपको बता ही चुकी हैं। देखो, यह अन्दर की बात है। आखिर नालायक, नालायक की मदद नहीं करेगा तो क्या उसके पिताश्री मदद करेंगे। तालियों की बारिश हुई। (शेष पृष्ठ 28 पर)

गोवा में शिवजी का मंगेश मंदिर

—डॉ० चंद्रिका प्रसाद शर्मा, लखनऊ

आखिर गोवा पहुँच ही जाता हूँ। कई दिन की थकान भरी रेल यात्रा के बाद जैसे ही वास्को-डे-गामा स्टेशन पर उतरता हूँ ताजी हवा के हल्के-हल्के झोंके स्वागत करने लगते हैं। थकान अपने आप भागने लगती है, और मैं टैक्सी पर सवार होकर गोवा की राजधानी पणजी की ओर चल देता हूँ। उम्दा, बिना धचकोलों की सड़क पर ड्राइवर फर्राटें से गाड़ी चला रहा है। सड़क के दोनों ओर गेरुए रंग की माटी और ठिगनी-ठिगनी पहाड़ियाँ नाना प्रकार की अनेक रंगों वाली वनस्पतियों को अपनी छाती पर उगायें हैं। अनगिनित रंग के फूल दिखाई पड़ रहे हैं। नारियल के लम्बे-लम्बे छरहरे पेड़ों पर पत्तों के डैनों के नीचे लोटों की आकृति लिए हुए फल लटक रहे हैं। क्या मजाल कौवा और गिलहरी इन पर चोंच और दाँत गड़ा सकें। चोंच मारते ही वह टूट जाय और दाँत गड़ाते ही वे सब खरिका ही जाएँ।

पहाड़ियों पर काजू, कटहल पीपल और नीम के घनी छाया वाले पेड़ हवा के झोंकों के साथ झूम रहे हैं। एक-एक पेड़ पर सौ-सौ बल्लरियाँ लिपटी है। क्या ही निराले रंग-बिरंगें फूल लगे हैं इनमें। वनस्पतियों की जातियों-प्रजातियों को गिना ही नहीं जा सकता। उनकी नयनाभिराम सुषमा हारे-थके मन को तरोताजा कर देती है।

प्राकृतिक घटा का अवलोकन करते-करते कब गोवा विश्वविद्यालय का अतिथिगृह आजाता है, कुछ पता ही नहीं चलता। जूआरी नदी के तट पर बने इस अतिथिगृह से विश्वविद्यालय के कई भवन साफ-साफ दिखाई दे रहे हैं। यह क्या ? यहाँ की दीवालों पर छात्र संघ के चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों के न नाम लिखे हैं और न ही कहीं कोई पोस्टर लगे हैं। कुछ आश्चर्य अवश्य होता है, क्या अपने यहाँ के विश्वविद्यालयों के भवनों की दीवारें तो रंगी पड़ी है। मेरे इस आश्चर्य का निवारण उस समय होता है जब कुलपति श्री पी.आर.दुभाषी से भेंट होती है। वे अपनी भेंट में बताते हैं—"यहाँ पर छात्रसंघ नहीं है। विश्वविद्यालय की दीवाल पर कोई कुछ नहीं लिख सकता और न कुछ चिपका ही सकता है। कभी कहीं कुछ चिपका दिखाई देता है तो मैं स्वयं अपने हाथों से साफ कर देता हूँ।"

अतिथिगृह के परिसर में अनेक फूल-पौधों की कतारें बड़ा सम्मोहक दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं। संध्या होते ही बेला की कलियाँ चटकने लगती हैं। एक मदमाती सुगंधि कमरे में धंसी चली आ रही है। रात गहराते-गहराते नींद आने लगती है। न गर्मी, न सर्दी, न मच्छर, न खटमल, एक ही नींद में भिनसार हो जाता है, चिरैयाँ बोलने लगती है। अपने नैत्यिक कार्यों से निवृत्त होकर समाचार पत्र बाँच रहा हूँ कि एकाएक—टक, टक, टक। द्वार खोलता हूँ तो टैक्सी ड्राइवर खड़ा है—"नमस्कार साब, चलिए मैं आगया।"

टैक्सी पणजी की स्वच्छ, प्रदूषण रहित, बिना भीड़-भाड़ वाली सड़क पर मजे-मजे चली जा रही है। ड्राइवर कोंकणी की कोई लोकगीत गुनगुना रहा है। मैं मन ही मन उस मंदिर की कल्पना कर रहा हूँ जिसे देखने का आज का कार्यक्रम है। सड़क के दोनों ओर काजू, नारियल और पीपल-बबूल के पेड़ों पर सूर्य की किरणें अपना स्वर्णिम बितान तान रही हैं। पक्षी उड़ रहे हैं, चरवाह-छोकरे पशु चराने निकल पड़े हैं। दूर-दूर पर बसे गाँवों की लजीली स्त्रियाँ ताम्र घटो में जल भरकर, कमर पर रखे इठलाती, बलखाती, बतियाती चली जा रही हैं। समुद्री पवन के मदमाते झोंकें सुरमई आलस्य उत्पन्न कर रहे हैं, किन्तु आँखें मनोरम दृश्यों को देखने और उन्हें मन की डिबिया में बंद करने में लगी हैं। दृश्यावलोकन में एक ऐसी उतावली होती जा रही है कि पलक भी नहीं बंद करना चाहती हैं।

धान के खेतों में किसान अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। चिड़ियों उड़ उड़कर धान की बालियाँ खुटक रहीं हैं। सड़क के किनारे के गाँवों के खपरैल वाले मकानों में किसी के सामने तुलसी लगी है, किसी के सामने क्रास बना है। केले के पौधों में घाँवरें लटक रही हैं। घाँवर के ऊपरी भाग के केले पक गए हैं, मध्य के अधपके हैं और नीचे के बिल्कुल कच्चे।

कुछ आगे बढ़ने पर लम्बी-लम्बी सींगों वाली गाएँ और भैंसे चरती दिखाई देती हैं। चरवाहे खेल में जुटे हैं। काजू के पेड़ों की भरमार है यहाँ। काजू के ऊपरी

छिलके से ही तो फेनी तैयार की जाती है। इस क्षेत्र में शराब की दुकानें अधिक हैं।

टैक्सी रोकते हुए ड्राइवर मुड़कर कहता है—"साब। आगया मंगेश मंदिर। मैं यही मंगेश मंदिर देखने तो आया हूँ। एक छोटी सी कम ऊँची पहाड़ी पर बना यह मंदिर दूर से लोगों को आकृष्ट करता है। इस के तीन ओर कई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। यहाँ हरीतिमा का अनोखा संसार है। पेड़ों पर लटकती हुई लतरें नाना प्रकार के चित्रात्मक दृश्य उत्पन्न करती हैं। यहाँ ढेरों फूल तोड़कर मालिने विचित्र गुच्छे बनाकर सस्ते-सस्ते बेचती हैं।

मंगेश मंदिर में शिव की पूजा होती है। लाल-लाल मिट्टी का यह क्षेत्र देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि अभी-अभी सुर्खी बिछाई गई है। मंदिर के द्वार पर कई माली और मालिनें बेलपत्र, फूलमालाएँ और हार बेच रहे हैं। मंदिर का परिसर बहुत विस्तृत है। मंदिर में स्वच्छ वातावरण है। सामने शिव लिंग है। एक ओर काफी बड़ा नगाड़ा रखा है जो आरती के समय बजाया जाता है। मंदिर के अन्दर हाथों में बेलपत्र और फूलों से भरे दोनें लिए स्त्री पुरुष खड़े हैं। लम्बी चोटी में गाँठ लगाए, श्वेत धोती का तहमत जैसा बाँधे, माथे पर चन्दन लगाए पुजारी जी कुछ मंत्र बुदबुदा रहे हैं। 'ॐ नमः शिवाय'—कहकर वे आरती कर रहे हैं।

मंदिर में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है जो अपने काले भुजंगी लम्बे-लम्बे केशों की चोटियों में पुष्पगुच्छ गूथे हुए हैं। मंदिर में ज्योति जल रही है। भक्तजन झूम-झूम कर कीर्तन कर रहे हैं।

मंगेश मंदिर का रख-रखाव अत्यन्त सराहनीय है। सब कुछ सुव्यवस्थित है। कुछ समय पूर्व स्वर सम्राज्ञी लतामंगेशकर ने इसके लिए पर्याप्त धनराशि दी थी। वे वर्ष में एकाध बार यहाँ आती भी हैं क्योंकि यह उन का पैतृक गाँव है। यहीं मंगेशी गाँव में इन के दादा-परदादा रहते थे।

मंदिर के दर्शन करके मैं वापस आता हूँ और टैक्सी ड्राइवर फिर पणजी की ओर चल देता है। एक बार मंदिर देखने में जी नहीं भरा है। फिर दोबारा अवश्य आना होगा।

(—जय पाठशाला पृष्ठ 26 का शेष भाग)

"अब आपके सामने हमारे गणित के अध्यापक 'च' अपने विचार प्रकट करेंगे," संचालक ने कहा।

"प्यारे विद्यार्थियों, मैं भी इसी पाठशाला का उत्पाद हूँ। इस पाठशाला की सरहद के बाहर जाकर अच्छी नौकरी की बड़ी कोशिश की, आई.ए.एस. की परीक्षा देनी चाही, दर-दर भटकता रहा। कहीं भी प्रमाणपत्रों को मान्यता नहीं मिली। फिर माँ तो माँ ही होती है। उनका बेटा कितना भी नालायक क्यों न हो, गोद में जगह दे ही देती है, यह कहते हुए 'च' का गला भर आया। कुछ समय के लिए सन्नाटा-सा छाया रहा।

इसी बीच एक विद्यार्थी ने मायूसी से पूछा, "क्या हमारा भी यही हाल होगा ?" 'च' ने तुरंत अपने को संभालते हुए कहा, "इस पाठशाला के उत्पादों की दौड़ केवल एक सीमा तक है। यह सत्य जगजाहिर है। मैं भावावेश में पता नहीं क्या-क्या बोल गये। मंच का क्षमाप्रार्थी हूँ।"

"मुझे आभार व्यक्त करने के लिए कहा गया है," 'ङ' ने संबोधित किया। यह काम किसी अन्य को देना चाहिए था। मैं तो केवल 'अपेक्षा कक्ष' की देखभाल करता हूँ। कौन, कब, किससे क्या लेन-देन कर रहा है, इस पर निगरानी रखता हूँ। मुँह बंद रखने के लिए टिप मिल जाती है। टिप संस्कारगत है। लेकिन आपने अभी-अभी प्रवेश लिया है। यहाँ का इतिहास, भूगोल, गणित, भाषा आदि आप धीरे-धीरे समझ जाएँगे। आप इस पाठशाला के भावी कर्णधार हैं। हमारी जगह आप ही लेंगे, क्योकि बाहर जगह नहीं मिलेगी। लेकिन आपने इस पाठशाला की परंपरा और संस्कृति को उत्तरोत्तर समृद्ध बनाना है। जय पाठशाला।

'क' ने मंच पर बैठे अपने साथियों को पास बुलाकर धीरे से कहा, "माना कि ये विद्यार्थी हमारा ही प्रतिरूप हैं। हमने पाठशाला की जो - जो खूबियाँ बताईं, ये सब समझ गए होंगे। लेकिन कहते हैं कि दीवारों के भी कान होते हैं।"

इतने में 'ख' बोल पड़ी "यदि यह अखबार में छप गया, तो........"

भारत की सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन

–एस.बी.मुरकुटे, बेलगाँव

संस्कृति शब्द की निष्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव अनेक संस्कारों का पालन करता है। भारत की सांस्कृतिक एकता सबसे श्रेष्ठ है। ऋषियों से लेकर आज के वैज्ञानिक, औद्योगिक और राजनैतिक युग में वह फली हुई है।

सागर के पानी को हाथ में उठाकर यह नहीं कहा जा सकता कि यह अमुक स्थान का ही है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति है। नाना जाति, धर्म, दर्शन, सभ्यता और संस्कृतियों का मेल समय-समय पर होता रहा है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। विविधता में एकता।

भारत आज जो कुछ है, उसकी रचना में भारतीय जनता के प्रत्येक भाग का योगदान रहा है। मनुष्य पंजाब और शिवालिक की ऊंची पद भूमिपर विकसित हुआ होगा। सिंधु की नहार में कृषि सभ्यता बनी होगी, सिन्धु के पठार में आज भी प्राचीन संस्कृति के लेख अवशेष मिलते हैं।

भारत की संस्कृति में थिग्रो आष्टिक आर्य, यूनानी, यूची शक, आंभीर, हुज, मंगोल और मुस्लिम, तुर्क और द्रविडों की संस्कृतियाँ भी है। परन्तु पानी का नाम नदी के नाम पर पड़ता है। उसी प्रकार संस्कृति सभ्यता और इतिहास भूगोल का नाम देश के आधार पर बनता है।

भारत बहुभाषी देश होते हुए भी इसकी सांस्कृतिक एकता ही साध्य और साधन है। काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तथा कच्छ से लेकर कलकत्ता सब एक सूत्र में आते हैं। आपस में व्यवहार करते हैं। यही भारत की सांस्कृतिक एकता की महत्ता है।

राजभाषा हिन्दी भारत की एकता और अखंडता की कड़ी है। हर एक धर्म के आदमी एक दूसरे धर्म के आदमी से मिलजुलकर एकता दिखाते हैं।

भारत का जनतंत्र दुनिया में सबसे बड़ा लोक जनतंत्र है संसद में अलग-अलग जाति, धर्म, भाषा के लोग एकता के साथ जनतंत्र चलाते हैं। सच है भारत की सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन है।

भारत की संस्कृति में मानव संरक्षण और आस्तिक भावना का समावेश है। अपना विकास दूसरों के सहयोग से ही होगा।

सम्पूर्ण भारत में वर्ष भर होने वाले प्रमुख पर्व, होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा बंधन, ईद, क्रिसमस, वैशाखी की ही तरह पूरी रथ यात्रा पर्व भी महत्त्वपूर्ण है। पुरी का प्रधान पर्व होते हुए भी यह रथ यात्रा पूरे भारत में लगभग सभी नगरों में उतनी ही श्रद्धा और प्रेम के साथ मनायी जाती है। जो लोग पुरी की रथ यात्रा में शामिल नहीं हो पाते हैं, वे अपने नगर की रथयात्रा में अवश्य शामिल होते हैं। रथ यात्रा का इस महोत्सव में जो सांस्कृतिक और पौराणिक दृश्य उत्पन्न होता है, उसी तरह प्रायः सभी देशवासी सौहार्द, भाईचारे और एकता के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, जिस श्रद्धा और भक्ति से पुरी के मंदिर में सभी लोग बैठकर एक साथ श्री जगन्नाथजी का रथ ख़ींचकर लोग अपने को धन्य मानते हैं।

सांस्कृतिक एकता का सहज सौहार्द, रूप श्री जगन्नाथ की यात्रा से प्रतीत होती है।

उसी तरह मैसूर का दशहरा, उत्तर भारत में होली का त्यौहार, ईद, क्रिसमस के त्यौहार भारत के भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, विविध जाति, धर्म के लोग अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। यही भारत की सांस्कृतिक एकता की कड़ी है।

एकता साध्य और साधन के आधार पर भारत की प्रगति होगी। दुनिया में हम सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त करेंगे।

कभी हमारी सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन बने तब।

जयशंकर प्रसाद जी का संक्षिप्त परिचय

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सम्वत् 1946 में काशी के एक सुप्रतिष्ठित वंश में हुआ था। आपके पिता का नाम देवी प्रसाद साहु था। प्रसाद जी का जन्म एक समृद्धशाली कुटुम्ब में हुआ था। पिता की मृत्यु के कारण परिस्थिति वश प्रसाद जी को घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी की शिक्षा दी गयी। वे घर पर पढ़ते भी थे और दुकानदारी का कामकाज भी करते थे और अवकाश पाते ही कविता लिखते थे, थोड़े ही दिनों में प्रसाद जी के बड़े भाई की भी मृत्यु हो गयी तब सम्पूर्ण उत्तर दायित्व प्रसाद जी पर आ पड़ा। उस समय आपकी उम्र सत्रह वर्ष की थी। दुःख का पहाड़ पड़ने पर भी प्रसाद जी ने अपनी साहित्य प्रवृत्ति को कुंठित न होने दिया। बराबर साहित्य आराधना में लगे रहे। प्रसाद जी का आकर्षण काव्य रचना की ओर थी। प्रसाद जी की प्रारंभिक रचनाएँ "इन्दु" में प्रकाशित हुआ करती थी। थोड़े ही दिनों में काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास और निबन्ध सभी पर असाधारण अधिकार हो गया था। प्रसाद जी का व्यक्तित्व प्रशंसनीय था। वे सरल, उदार, मृदु भाषी और स्वाभिमानी थे। प्रसाद जी सांस्कृतिक और धार्मिक व्यक्ति थे एकान्त साधना ही उन्हें प्रिय था। बाद में उन्हें यक्ष्मा रोग ने बहुत कमजोर बना दिया था और संवत् 1994 में वे इस संसार से बिदा हो गये।

कुछ रचनाएँः प्रसाद जी सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले थे उन्होंने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबन्ध सभी क्षेत्र में प्रतिभा का प्रदर्शन किया था।

प्रेम पथिक, चित्राधार, कानन कुसुम, झरना, नाटक, कहानी में विशाख, राज्यश्री, छाया इत्यादि में आँसू और कामायनी ये दोनों प्रौढ़ रचनाएँ हैं। साथ ही नाटकों और उपन्यासों में अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, कामना, आकाशदीप, एक घूंट, आँधी, तितली, ध्रुवस्वामिनी आदि की रचना प्रौढ़ काल में की थी। कामायनी ने प्रसाद जी को सदा के लिए अमर बना दिया है।

रचनाओं पर एक दृष्टिः प्रसाद जी महाकवि थे। काव्य के क्षेत्र में एक महाकवि की भाँति आपने काव्य-कल्पना का विस्तार किया है। आँसू और कामायनी आपकी सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ हैं। आँसू में प्रसाद जी ने कोमल भावनाओं और अनुभूतियों का चित्रण किया है। कामायनी एक महाकाव्य है। जिसकी रचना का आधार मनु की कथा है इसमें काव्य और कलापक्ष का बहुत प्रबलता से प्रयोग हुआ है।

काव्य सौन्दर्य :- प्रसाद जी ने काव्य के क्षेत्र में अपनी कला का प्रदर्शन बड़ी कुशलता से किया है। प्रसाद जी के काव्य को तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं– प्रथम चरण में प्रसाद, दूसरे में व्यक्तिवादि प्रसाद और तीसरे में आध्यात्मिक प्रसाद। प्रथम चरण में प्रसाद जी ने खड़ी बोली में जो रचनाएँ की हैं उसमें उनके जीवन की झलक मिलती है। दूसरे व्यक्तिवादी चरण में प्रसाद जी ने दुख सुख के राग गाये इसमें उनका वैयक्तिक सुख दुख भी था जिसे प्रसादजी ने नई शैली और नवीन अभिव्यंजनाओं से काम लिया। व्यक्तिवादी के रूप में प्रसाद जी ने काव्य में जीवन को स्थान दिया है। व्यक्तिवाद के क्षेत्र में अनुभूतियों के साथ ही साथ नई कल्पनाओं की सृष्टि की। नये-नये वाक्य विन्यास नये-नये शब्दों का प्रयोग किया। भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से नवीन काव्य परिपाटी चलाई।

व्यक्तिवादी प्रसाद से आध्यात्मिक प्रसाद का स्थान कहीं अधिक ऊँचा है। आध्यात्मिक प्रसाद की काव्य दृष्टि बड़ी तीव्र और रहस्यमयी है। आध्यात्मवाद के क्षेत्र में प्रसाद जी छायावादी और रहस्यवादी भी हो गये हैं। छायावाद और रहस्यवाद के क्षेत्र में प्रसाद जी प्रथम कवि हैं। प्रसाद जी रहस्यवाद के क्षेत्र में अद्वैतवादी हैं। प्रकृति और मानवी सौन्दर्य में कहीं भी स्थूलता के लिए स्थान नहीं हैं। प्रसाद जी ने एक कुशल काव्य शिल्पी के रूप में काव्यों की रचना की है।

भाषा :- प्रसाद जी युगान्तरकारी महाकवि थे। प्रसाद जी की भाषा के दो रूप मिलते हैं। व्यवहारिक और संस्कृत प्रधान। प्रसादजी की भाषा सीधी सादी और बहुत सरल है। ज्यों ज्यों रचनाओं का विकास होता गया, त्यों त्यों उनकी भाषा गम्भीर

(शेष पृष्ठ 32 पर)

सभा - समारोह

"हिन्दी दिवस" की पावन बेलापर 'लोकयज्ञ' पत्रिका का "हिन्दी तुझे सलाम" काव्य विशेषांक प्रकाशित
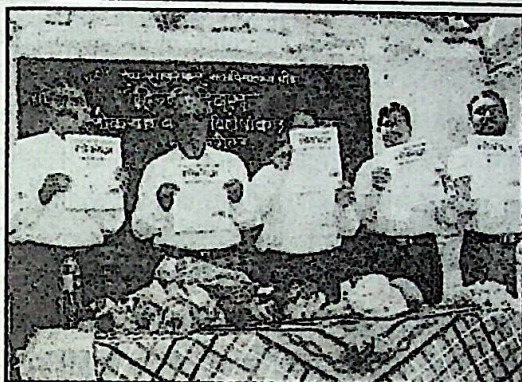
बीड महाराष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनःनिर्माण की प्रथम हिन्दी मासिक पत्रिका 'लोक यज्ञ' ने 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में अपना दूसरा राष्ट्रीय और स्तरीय काव्य विशेषांक 'हिंन्दी तुझे सलाम' हाल ही प्रकाशित किया। जिसका लोकार्पण समारोह 14 सितम्बर 2004 को बीड स्थित स्व.सावरकर महाविद्यालय के कालिदास सभागार में बडे ही हर्षोल्लास से संपन्न हुआ।

"हिन्दी तुझे सलाम" काव्य विशेषांक के विमोचन के पश्चात् डॉ0 सुधाकरराव शेंडगे ने कहा कि 'बीड जैसे अहिन्दी अल्प परिचित छोटे से नगर से प्रा. सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' जी ने लोक यज्ञ जैसी राष्ट्रीय पत्रिका निकालकर महान कार्य किया है। लोक यज्ञ पत्रिका ने अब तक कई विशेषांक निकाले हैं लेकिन आज यह जो 'हिन्दी तुझे सलाम' नामक हिन्दी दिवस काव्य विशेषांक निकाला है, उससे सारा हिन्दी साहित्य लाभान्वित होगा।

हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डॉ0 हणमंतराव पाटीलजी ने कहा कि, 'यज्ञ की परम्परा हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही है। यज्ञ के नाना प्रकार हैं। यज्ञ सद्भावनाओं का प्रतीक है। किसी की जिज्ञासा की भूख मिटाने के लिये किया जानेवाला यज्ञ 'ज्ञानयज्ञ' कहलाया जाता है। अक्षजी की पत्रिका 'लोक यज्ञ' यह काम लगातार तीन वर्षों से भारत में कर रही है। पत्रिका ने अब तक कई विशेषांक, प्रकाशित किया है।

अध्यक्षीय समापन के अपने वक्तव्य में डॉ0 जी.एम.कुलकर्णी ने कहा कि, 'लोकयज्ञ' पत्रिका ने अल्प समय में ही सारा हिन्दी क्षेत्र काबीज किया है, राष्ट्रीय स्तर पर इस पत्रिका ने अपनी अलग पहचान बनायी है। 'हिन्दी तुझे सलाम' के इस लोकार्पण समारोह का सूत्र संचालन हिन्दी की छात्रा कु.रोहिणी घोडके ने किया तो आभार प्रदर्शन प्रा. ओमप्रकाश झंवर ने किया। समारोह के लिए प्रा. लक्ष्मीकांत बाहेगव्हाणकर (पत्रकार), प्रा. नारायण शिंदे, प्रा. गायकवाड जोगेन्द्र, प्रा. सुहास जोशी, प्रा. महेश देशमुख, प्रा.सौ.प्रेमा पांडे, प्रा.सौ. कुरुडे सुनिता, प्रा.सौ.गोस्वामी मेघा, प्रा. सचिन कंदले आदि के साथ शहर के सभी महाविद्यालय के हिन्दी के छात्र, शहर के गणमान्य नागरिक और हिन्दी प्रेमी बडी मात्रा में उपस्थित थे। ●

एस. के. ए. हेच. सं. पदवीपूर्ण कालेज, दावणगेरे में हिन्दी दिवस कार्यक्रम

एस. के. ए. हेच. सं. पदवीपूर्ण कालेज, दावणगेरे में "प्रेमचन्द हिन्दी विद्यालय" की ओर से एस.के.अब्दुल हमीद, पदवी पूर्ण कालेज, दावणगेरे यहाँ पर 14 सितंबर 2004 को बहुत लगन और उत्साह के साथ 'हिन्दी दिवस' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री जुलकर नैन बांषा हिन्दी प्राध्यापक एवं प्रचारक कार्यक्रम के आयोजक थे। इस कालेज के प्रांशुपाल श्री के.कादर बाषा ने 'हिन्दी दिवस' का महत्व बताते हुए कहा कि हिन्दी राष्ट्र की संपर्क भाषा है। जनाब अब्दुल सुभान साब ने मुख्य अतिथि के भाषण में यह कहा कि हिन्दी मिठास एवं सरल भाषा है। इस कालेज के 'कन्नड' प्राध्यापक श्री गंगळप्पनवर हिन्दी भाषा को राष्ट्र की एकता में सहायक माना है। इस कालेज के मौलाना इब्राहिम साहब ने भी हिन्दी भाषा को सराहा। कालेज की विद्यार्थिनी अफसाना और यास्मीन की ओर से प्रार्थना हुई। द्वि.पि.यू. विध्यार्थिनी तबस्सुम खानम की ओर से कार्यक्रम में स्वागत भाषण हुआ। हिन्दी विद्यार्थी नासिर कार्यक्रम निरूपण किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम विजेताओं को इस कालेज के अब्दुल सुभान साब ने बहुमान वितरण किए।

'हिन्दी दिवस' कार्यक्रम आचरण के लिए इस कालेज ने भरपूर सहयोग दिया है। ●

'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' की अमर गायिका
सुभद्रा कुमारी चौहान की जन्म शताब्दी पर श्रद्धा-सुमन

चेन्नई नगर की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'साहित्यानुशीलन समिति' के तत्वावधान में राष्ट्रीय कवयित्री का जन्म-शताब्दी समारोह रविवार, 17 अक्तूबर 2004 को आयोजित किया गया। प्रतिष्ठित उद्योगपति, अध्यात्म-चिंतक एवं लेखक और समिति-संरक्षक श्रीयुत् बालकृष्ण गोयनका जी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिंद और हिंदी की कीर्ति-गायिका सुभद्राकुमारी चौहान को नगर के साहित्यकारों की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। समिति के संरक्षक और लब्धप्रतिष्ठ समाज सेवी श्री शोभाकांत दासजी ने कवयित्री के पुरस्कृत काव्यग्रंथ 'मुकुल' के काव्यांशों को उद्धृत करते हुए एक राष्ट्रवादी रचनाकार के रूप में उनका सश्रद्ध स्मरण किया। तदुपरांत कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पक्षों पर विद्वान् श्री आर. शौरिराजन, डॉ० इंदरराज बैद, डॉ० भवानी अश्विनी कुमार और डॉ० एस.विजया ने अपने अनुशीलन-पत्र प्रस्तुत किये। अन्य साहित्यकारों में डॉ० पी.के.बालसुब्रह्मण्यम, डॉ० एन.सुंदरम्, डॉ० एस. सुब्रह्मण्यन्, श्री अतुल कुमार, श्री पी.आर.वासुदेवन 'शेष', श्रीमती सी.बी. प्रसाद, सुश्री एन.सुधा आदि ने भी जन्म-शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर अमर कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के प्रति भाव-सुमन अर्पित किये।

—डॉ० इंदरराज बैद

ಪ್ರಚಾರಕರಿಗೂ ಹಾಗೂ ಪೋಷಕರಿಗೂ ಪರೀಕ್ಷಾ ದಾಖಲಾತಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಚನೆ

ಹಿಂದೀ ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ದಾಖಲಾತಿಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಹೆಸರು, ಪೋಷಕರ ಹೆಸರನ್ನು ಪ್ರಚಾರಕರು ಸರಿಯಾಗಿ ಭರ್ತಿಮಾಡದೇ ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಂತರ 2–3 ಹಾಗೂ 10 ವರ್ಷಗಳಾದ ಮೇಲೆ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ತಪ್ಪಾಗಿದೆ ಎಂದು ಕಾರ್ಯಾಲಯಕ್ಕೆ ಹೆಸರು ಬದಲಾಯಿಸಲು ಬರುತ್ತಾರೆ. ಇದರಿಂದ ಸಮಿತಿಯ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತಿದೆ. ವರ್ಷಪೂರ್ತಿ ಇದೇ ಕಾರ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ಅಂದರೆ 2005ನೇ ಸಾಲಿನಿಂದ ಯಾವುದೇ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿಯೂ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಹಾಗೂ ಪೋಷಕರ ಹೆಸರನ್ನು ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದು ಈ ಮೂಲಕ ಸೂಚಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದುದರಿಂದ ಪ್ರಚಾರಕರು ಆವೇದನಾ ಪತ್ರಗಳನ್ನು ಭರ್ತಿಮಾಡುವಾಗ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಸರಿಯಾಗಿ ಅಂದರೆ ಶಾಲಾ ಕಾಲೇಜುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ನೊಂದಾಯಿಸಿರುವಂತೆಯೇ ಭರ್ತಿ ಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸಲು ಪ್ರಾರ್ಥನೆ.

ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿನಿ

(जयशंकर प्रसाद जी का संक्षिप्त परिचय पृष्ठ 30 का शेष भाग)

होती गयी। प्रसाद जी भाषा के क्षेत्र में एक कुशल कारीगर हैं। उनके शब्द भाषा में नगीने की भाँति जड़े हुए हैं। प्रसाद जी के शब्द कठिन अवश्य हैं पर वे भाव में ढ़ले हुए हैं। प्रसाद जी की भाषा को भाव प्रधान भाषा कह सकते हैं।

शैली: भाषा की भाँति शैली के क्षेत्र में भी प्रसादजी ने नवीन युग की स्थापना की है। प्रसादजी की शैली लाक्षणिक शब्दों और वाक्यों से गठित है। स्थान-स्थान पर नाटकीय प्रयोग मिलते हैं जो भावपूर्ण चित्रों को सजाते हैं। प्रसाद जी की शैली भावात्मक शैली है जो बड़ी प्रवाहपूर्ण और सरस है। प्रसादजी ने बड़ी कुशलता के साथ अपने भावों का संसार बसाया है। प्रसादजी के छंदों में गतिशीलता और ओजस्विता है। आप सच्चे रूप में मानवता के कवि थे।

—श्रीमती विनीता जैन

उपराष्ट्रपति द्वारा मोहन भाई को "गाँधी सेवा पुरस्कार"

नई दिल्ली 01-10-2004 – गाँधी जयन्ती के उपलक्ष्य में उपराष्ट्रपति निवास पर आयोजित एक समारोह में राजस्थान के गाँधीवादी कार्यकर्ता श्री मोहनलाल जैन को उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने "गाँधी सेवा पुरस्कार" प्रदान किया। इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में शेखावत ने कहा कि "मोहन भाई का सम्मान किसी व्यक्ति का नहीं वरन् सेवा व साधना का सम्मान है। उन्होंने कहा-अपने लिए, अपने परिवार के लिए और सुख-समृद्धि की वृद्धि के लिए हर व्यक्ति जीना चाहता है। मोहन भाई ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिनके मुँह से मैंने सुना है कि गाँधी जी की राह पर चलते हुए जनसेवा करने के लिए वे शतायु होना चाहते हैं।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि गाँधी और अणुव्रत दोनों आज के परिप्रेक्ष्य में देश की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। मैंने आचार्य तुलसी से अणुव्रत को गहराई से समझा था और तब से इस आन्दोलन के प्रति मेरी श्रद्धा बनी रही है। राजस्थान विधानसभा में अणुव्रत को सर्वसम्मति से पास करवाना एक ऐतिहासिक कदम था जिसका मुझे आज भी गौरव अनुभव होता है। मुझे खुशी है कि मोहन भाई ने महात्मा गाँधी और आचार्य तुलसी द्वारा बताए मार्ग पर चल कर देश की बड़ी सेवा की है।

इस अवसर पर अपने उदगार व्यक्त करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विद्वान शिष्य मुनिश्री प्रशांतकुमार ने कहा कि उस दीपक का मूल्य होता है जो अंधेरे को निगल कर प्रकाश फैलाता है। इसी प्रकार व्यक्ति का महत्व होता है जो सुख सुविधाएँ ठुकराकर विश्व मानव का मार्गदर्शन करता है। मोहन भाई ने जीवन व्यवहार, कर्म और पुरुषार्थ के द्वारा समाज को प्रेरणा दी है। मुनिश्री जी ने कहा अणुव्रत आंदोलन को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करने में मोहनभाई की विशेष भूमिका रही है। मैंने देखा है कि किस प्रकार निर्माण समिति के माध्यम से पदयात्राओं, प्रदर्शनियों, फिल्म प्रदर्शन एवं नुक्कड़ नाटक जैसे रचनात्मक तरीके अपनाकर आपने सैंकड़ों सैंकड़ों गांवों में अणुव्रत व संस्कार निर्माण के संदेश को पहुंचाया है। मुनिश्री ने कहा कि गाँधी व अणुव्रत का संगम ऐसे आदर्श कार्यकर्त्ता ही अपने समर्पण के बल पर समाज में कोई बदलाव ला सकते हैं।

गाँधी दर्शन समिति के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय व्यक्ति के साहित्यकार चैन्नई के डॉ0 बालशौरी रेड्डी ने कहा कि आज जहां देश के प्रति समर्पित सेवाभावी व्यक्तियों की कमी होती जा रही है, मोहन भाई का व्यक्तित्व एक प्रकाश पुंज की भाँति है। उससे रोशनी पाकर नई पीढ़ी अपना पथ प्रदर्शन कर सके इसी उद्‌देश्य से समिति ने मोहन भाई को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। बच्चे और हरिजन गाँधीजी के प्रिय थे, मोहन भाई ने भी इन्हीं के बीच अपना जीवन खपा दिया।

इससे पूर्व समिति के महामंत्री कोलकाता के डॉ0 मंगलाप्रसाद ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि गाँधी जन्मशती वर्ष 1969 में गाँधी दर्शन समिति (राष्ट्रीय) की स्थापना काका साहेब कालेलकर ने की और उसके बाद अनेक महान विभूतियों का मार्गदर्शन इसे मिला है। उन्होंने बताया कि गाँधी सेवा पुरस्कार से अब तक सर्वश्री आचार्य जे.बी.कृपलानी, कृष्णप्रसाद भट्टाराय, शोभना राणाडे, विजय सिंह नाहर, प्रफुल्ल चंद्र सेन, विमला ठकार, गोकुलभाई भट्ट, दादा धर्माधिकारी, यशपाल जैन, आचार्य राममूर्ति, वियोगी हरी और सुन्दरलाल बहुगुणा जैसे गाँधी विचारकों को सम्मानित किया है।

पुरस्कार के प्रत्युत्तर में श्री मोहन भाई ने कहा कि बचपन में गाँधी से प्रभावित होकर मैंने गाँधी की राह पर चलने का प्रण लिया था। आज गाँधी सेवा पुरस्कार ने मेरे इस प्रण को मजबूत किया है और मुझे आत्मविश्वास है कि अगले 15 वर्षों में मैं गाँधी के बताए मार्ग पर न सिर्फ चलने बल्कि प्रयास करूंगा। इस सम्मान के लिए गाँधी दर्शन समिति एवं माननीय उपराष्ट्रपति जी का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मैं अपने जीवन में गाँधी के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं कर सका। इस कमी की पूर्ति करने के लिए मैंने सदैव गाँधी के जीवन दर्शन को अपनाने का प्रयास किया है।

कार्यक्रम में श्री पंचशील जैन ने गाँधीजी का ऐतिहासिक चित्र एवं कल्पना जैन ने बच्चों का देश का विशेषांक महामहिम को भेंट किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन प्रमोद घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ बच्चों द्वारा प्रस्तुत गाँधीजी के प्रिय भजन "वैष्णवजन तो" से हुआ।

Reg.No.CPMG/K.A./BGS-97/2003-05 POSTED AT CHAMARAJPET, BANGALORE-18

"संगम"

–दत्तात्रय आर्य, हुमनाबाद

जल की तरंग, प्रकृति की उमंग
बड़ा अधभूत लगता है
धरती पर इन तीनों का संगम।
धरती पारंगत, जल की सहूलियत
इन दोनों के मिलन से,
और वायु, सूर्य की किरणों से,
करवटें लेती है
जीव-जंतुओं [illegible] हसरत।
इन सभी तत्वों से, परिपूर्ण प्रकृति,
एक दूजे की कमियां [illegible]
अलग-थलग पड जाते हैं
इन की कसरत।
ये संपूर्ण प्रकृति का चलन,
प्रकृति की कल्पना करना
बडा कठिन है मानव को ये
अधभूत दृश्य,
कल्पना से दूर किनारा,
बस, दृष्टि में, जितना भी समोयेगा,
कर लो "स्नेही" अपनी
जीवन की पूर्ण हसरत।

श्रद्धा एवं गौरव के साथ संस्मरण

27 वीं पुण्यतिथि

जन्म
26-04-1925

मृत्यु
03-12-1977

स्व. वी.एस. मीराबाई

समिति के भवन निर्माण हेतु (मीराबाई ने) आपने अपनी पूरी संपत्ति दान में दी है। हिन्दी अध्यापिका और हिन्दी प्रचारिका के तौर पर जीवन के अंत तक आपने सफलता के साथ कार्य किया है। समिति के साहित्य-विभाग में और पुस्तक प्रकाशन में आपका पूरा सहयोग रहा।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति का परिवार रोज आपका नाम लेता है और आपके प्रति श्रद्धा एवं गौरव प्रदर्शित करता है।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर की ओर से श्रीमती वी.एस. शांताबाई, एम.ए., द्वारा के.एम.हेच.एस.एस. प्रेस, बेंगलोर-18, में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। दूरभाष : 26617777